CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2007 with Solution PDF-Set 2/1/1

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 110**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 20 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 1, 4, 7, 9, 19 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. निम्नलिखित काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

समर में अमर कर प्राण,
गान गाए महासिंधु-से,
सिंधु-नद तीरवासी !
सैंधव तुरंगों पर
चतुरंग-चमू-संग
"सवा-सवा लाख पर
एक को चढ़ाऊँगा,
गोविंदसिंह निज
नाम जब कहाऊँगा।"

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सप्रसंग व्याख्या में कवि और रचना का परिचय, प्रसंग, भावार्थ तथा काव्यगत विशेषताएँ स्पष्ट की जाती हैं।
- ऐतिहासिक वीरता का स्मरण स्वाभिमान, संगठन और आत्मविश्वास जगाने का साधन है।

चरण 1: संदर्भ और प्रसंग प्रस्तुत पंक्तियाँ सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की कविता 'जागो फिर एक बार' से हैं। कवि भारतीयों को अपनी गौरवशाली वीर परंपरा का स्मरण कराकर जागने और पराधीनता के विरुद्ध संघर्ष करने की प्रेरणा देते हैं। इस अंश में गुरु गोविंदसिंह की वीरता और उनकी चुनौती का उदाहरण देकर सुप्त आत्मबल को जगाया गया है।

चरण 2: पंक्तियों की व्याख्या कवि कहते हैं कि सिंधु नदी के तट पर रहने वाले वीरों ने युद्ध में अपने प्राणों का बलिदान देकर अपना यश अमर कर लिया। उनके शौर्य के गीत महासागर के समान गहरे और व्यापक स्वर में गूँजे। वे श्रेष्ठ सैंधव घोड़ों पर सवार होकर चतुरंगिणी सेना के साथ युद्धभूमि में उतरते थे। चतुरंगिणी सेना में पैदल, घुड़सवार, हाथी और रथ सम्मिलित होते हैं। इस चित्रण में उनके साहस, युद्धकौशल और संगठित शक्ति की झलक मिलती है।

चरण 3: गुरु गोविंदसिंह की प्रतिज्ञा गुरु गोविंदसिंह की उद्घोषणा का भाव है कि वे अपने एक-एक योद्धा में इतना साहस और आत्मविश्वास उत्पन्न करेंगे कि वह सवा लाख विरोधियों का सामना करने को तैयार होगा। तभी वे अपने नाम को सार्थक मानेंगे। यह संख्या वीरता के उत्कर्ष को व्यक्त करती है; इसका आशय केवल सैनिकों की गणना करना नहीं है। कवि इस उदाहरण द्वारा बताते हैं कि संख्याबल से अधिक महत्त्व साहस, आत्मबल, नेतृत्व और लक्ष्य के प्रति समर्पण का है।

चरण 4: काव्यगत विशेषताएँ अंश में वीर रस और ओज गुण की प्रधानता है। महासिंधु से तुलना में उपमा है और एक योद्धा को सवा लाख के सामने खड़ा करने के कथन में अतिशयोक्ति वीरता को प्रभावशाली बनाती है। तत्सम शब्दावली, छोटे लयपूर्ण पद और ऐतिहासिक प्रसंग मिलकर उद्बोधन को शक्तिशाली बनाते हैं।

चरण 5: निष्कर्ष कवि गुरु गोविंदसिंह और उनके योद्धाओं के शौर्य का स्मरण कराकर भारतीयों को निर्भय, संगठित और आत्मविश्वासी होकर संघर्ष करने की प्रेरणा देते हैं।

त्वरित सुझाव: व्याख्या में पहले ऐतिहासिक प्रसंग दें, फिर सवा लाख की चुनौती का भाव आत्मबल से जोड़ें और अंत में वीर रस स्पष्ट करें।

अथवा

1. निम्नलिखित काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

ऐसे आओ
जैसे गिरि के श्रृंग शीश पर
रंग-रूप का क्रीट लगाए
बादल आए
हंस-माल-माला लहराए
और शिला-तन—
कांति-निकेतन-तन बन जाए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रकृति के रूपक और उपमाएँ मानवीय प्रेम तथा सौंदर्य की अनुभूति को मूर्त बनाती हैं।
- सप्रसंग व्याख्या में दृश्य का अर्थ बताने के साथ उसका भावात्मक संकेत और भाषा-सौंदर्य भी स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: संदर्भ और प्रसंग प्रस्तुत पंक्तियाँ केदारनाथ अग्रवाल की कविता 'ऐसे आओ' से ली गई हैं। कवि अपने प्रिय के आगमन की कामना करते हैं। वे चाहते हैं कि प्रिय का आगमन जीवन में वैसा ही सौंदर्य, उल्लास और परिवर्तन लाए जैसा पर्वत पर बादलों के आने से प्रकृति में दिखाई देता है। इस इच्छा को उन्होंने पर्वत, मेघ और हंसों के मनोरम दृश्य के माध्यम से व्यक्त किया है।

चरण 2: प्राकृतिक दृश्य की व्याख्या कवि प्रिय से कहते हैं कि तुम इस तरह आओ जैसे पर्वत के ऊँचे शिखरों पर बादल आते हैं। शिखर पर्वत का शीश बन गए हैं और रंग-बिरंगे बादल उस शीश पर रखे सुंदर मुकुट के समान दिखाई देते हैं। बादलों के रंग और बदलते रूप पर्वत की कठोर आकृति में नया आकर्षण भर देते हैं। यहाँ क्रीट का अर्थ मुकुट है। यह दृश्य ऊँचाई, भव्यता और सजावट का एक साथ अनुभव कराता है।

चरण 3: हंसों और शिलाओं के बिंब का भाव हंसों की पंक्तियाँ मानो सुंदर मालाओं की तरह लहराती हैं। उनके कारण पूरा दृश्य सजीव, कोमल और गतिशील हो उठता है। जो पर्वत पहले केवल कठोर शिला का शरीर दिखाई देता था, वही अब कांति अर्थात सुंदरता और चमक का निवास बन जाता है। कवि की कामना है कि प्रिय की उपस्थिति भी जीवन की कठोरता और नीरसता को इसी प्रकार सुंदरता तथा आनंद से भर दे। प्रिय का आगमन केवल किसी व्यक्ति का आना नहीं, समूची अनुभूति का रूपांतरण है।

चरण 4: काव्य-सौंदर्य ऐसे और जैसे के प्रयोग से प्रिय के आगमन तथा मेघों के आगमन में उपमा स्थापित होती है। पर्वत के सिर और बादलों के मुकुट की कल्पना दृश्य को मानवीय रूप देती है। हंसों की माला, शिला-तन और कांति-निकेतन जैसे बिंब चित्रात्मकता लाते हैं। मुक्त लय, कोमल भाव और प्रकृति के माध्यम से व्यक्त प्रेम इस अंश की विशेषताएँ हैं।

चरण 5: निष्कर्ष कवि प्रिय के ऐसे मंगलमय आगमन की कामना करते हैं जो मेघों की तरह कठोर और नीरस जीवन को सौंदर्य, सजीवता तथा आनंद से भर दे।

त्वरित सुझाव: पहले पर्वत, मेघ-मुकुट और हंस-माला का दृश्य खोलें; फिर शिला-तन के सुंदर बन जाने को प्रिय के आगमन के प्रभाव से जोड़ें।

2(क). निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं दो का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए :

यों तो बच्चों की गुड़िया-सी भोली मिट्टी की हस्ती क्या,
आँधी आए तो उड़ जाए, पानी बरसे तो गल जाए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य-सौंदर्य में भाव-सौंदर्य और शिल्प-सौंदर्य दोनों का विवेचन आवश्यक है।
- अलंकार का नाम बताने के साथ संबंधित शब्द और उससे उत्पन्न प्रभाव भी स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: भाव-सौंदर्य इन पंक्तियों में मिट्टी के सरल, भोले और देखने में कमजोर अस्तित्व का चित्रण है। मिट्टी की हस्ती बच्चों की गुड़िया जैसी लगती है, जिसे बाहरी शक्तियाँ सरलता से प्रभावित कर सकती हैं। आँधी आने पर उसका उड़ जाना तथा वर्षा में गल जाना उसकी कोमलता और अस्थिरता को सामने लाता है। कवि का प्रश्न मिट्टी के अस्तित्व को तुच्छ बताने वाली सामान्य दृष्टि को व्यक्त करता है। इस अंश में मिट्टी की असहाय-सी दिखती दशा का मार्मिक और सहज चित्र उपस्थित है।

चरण 2: अलंकार और बिंब मिट्टी की तुलना बच्चों की गुड़िया से की गई है। गुड़िया उपमान है, मिट्टी उपमेय है और 'सी' उपमावाचक शब्द है; इसलिए यहाँ उपमा अलंकार है। 'भोली' विशेषण मिट्टी में मानवीय सरलता का भाव जगाता है। आँधी में उड़ने और पानी में गलने के दृश्यबिंब मिट्टी की नाजुक स्थिति को आँखों के सामने ला देते हैं। इस प्रकार अमूर्त दुर्बलता परिचित, ठोस दृश्यों के माध्यम से स्पष्ट होती है।

चरण 3: भाषा और लय भाषा सरल, सहज और बोलचाल के निकट है। 'हस्ती क्या' का प्रश्नवाचक प्रयोग अभिव्यक्ति को प्रभावपूर्ण बनाता है। 'आए', 'जाए', 'बरसे' और 'गल जाए' की क्रियाएँ दृश्य में गति लाती हैं। 'उड़ जाए' और 'गल जाए' की समान रचना तथा तुक गीतात्मक लय उत्पन्न करती है। घरेलू गुड़िया और प्राकृतिक आँधी-वर्षा के मेल से भाव सामान्य पाठक तक सीधे पहुँचता है।

चरण 4: निष्कर्ष मिट्टी की भोली और नाजुक हस्ती का चित्र उपमा, सजीव बिंब, सरल भाषा और लयात्मक अभिव्यक्ति के कारण प्रभावशाली बन गया है।

त्वरित सुझाव: काव्य-सौंदर्य में भाव बताकर गुड़िया-सी उपमा का प्रमाण दें और उड़ जाए तथा गल जाए की समान लय का प्रभाव स्पष्ट करें।

2(ख). निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं दो का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए :

पुहुप मध्य ज्यौं बास बसत है मुकुर माँहि जस छाँई।
तैसे हां रहि बसै निरंतर घट ही खोजो भाई।। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य-सौंदर्य में भावपक्ष के साथ भाषा, बिंब और अलंकार का प्रभाव स्पष्ट किया जाता है।
- फूल की सुगंध तथा दर्पण की छाया के परिचित बिंब अदृश्य आध्यात्मिक सत्य को समझाते हैं।

चरण 1: भाव-सौंदर्य कवि समझाता है कि ईश्वर मनुष्य के भीतर निरंतर विद्यमान है। जैसे फूल में सुगंध समाई रहती है और दर्पण में प्रतिबिंब दिखाई देता है, वैसे ही परमात्मा प्रत्येक घट अर्थात शरीर के भीतर रहता है। इसलिए उसकी खोज बाहरी स्थानों में भटकने के बजाय अपने अंत:करण में करनी चाहिए। यह कथन आत्मचिंतन और अंतर्मुखी साधना का संदेश देता है। इन उदाहरणों की विशेषता यह है कि सुगंध फूल से अलग बाहर की वस्तु नहीं है; इसी प्रकार परमात्मा को भी अपने से दूर समझना उचित नहीं। घट में खोजने की प्रेरणा साधक को अपने अनुभव और आत्मबोध की ओर लौटाती है।

चरण 2: शिल्प-सौंदर्य "ज्यौं", "जस" और "तैसे" के माध्यम से फूल-सुगंध, दर्पण-प्रतिबिंब और जीव-परमात्मा की समानता दिखाई गई है; इससे उपमा का सुंदर विधान हुआ है। सुगंध और छाया जैसे सहज बिंब कठिन आध्यात्मिक विचार को अनुभव के निकट लाते हैं। "पुहुप", "बास", "मुकुर", "माँहि" और "घट" जैसे लोकप्रचलित शब्द भाषा को सहज एवं लोकसुलभ बनाते हैं। "भाई" का संबोधन उपदेश को आत्मीय बनाता है और चरणों की लय उसकी स्मरणीयता बढ़ाती है।

चरण 3: निष्कर्ष इस काव्यांश में अंत:स्थित ईश्वर का भाव सहज उपमाओं, लोकभाषा और आत्मीय संबोधन के द्वारा प्रभावशाली बना है।

त्वरित सुझाव: भाव के लिए भीतर बसे ईश्वर को और शिल्प के लिए फूल-सुगंध तथा दर्पण-प्रतिबिंब की उपमाओं को जोड़कर लिखें।

2(ग). निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं दो का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए :

जहाँ तुम्हारे चरण, वहीं पर
पद-रज बनी पड़ी हूँ मैं
मेरा निश्चित मार्ग यही है
ध्रुव-सी अटल अड़ी हूँ मैं। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता के भावपक्ष में समर्पण, निष्ठा और संकल्प की पहचान आवश्यक है।
- प्रतीक तथा उपमा की सार्थकता उनके द्वारा व्यक्त भाव से स्पष्ट होती है।

चरण 1: समर्पण की भावना वक्ता कहती है कि जहाँ उसके आराध्य के चरण हैं, वहीं वह चरणों की धूल बनकर पड़ी है। "पद-रज" बनना अहंकार के त्याग और संपूर्ण समर्पण का सूचक है। वह अपने जीवन का मार्ग निश्चित कर चुकी है और उसे बदलना नहीं चाहती। यहाँ विनम्रता के साथ अपने चुने हुए मार्ग पर अडिग रहने की शक्ति भी व्यक्त हुई है। समर्पण केवल भावुक अभिव्यक्ति नहीं, जीवन का स्थायी निर्णय बन गया है। पद-रज की नीची स्थिति और ध्रुव की ऊँची स्थिति के बिंब मिलकर भाव की व्यापकता बढ़ाते हैं। एक ओर विनय है, दूसरी ओर दृढ़ता; दोनों परस्पर विरोधी न होकर निष्ठा के पूरक बनते हैं। इस कारण वक्ता का समर्पण दुर्बलता नहीं, संकल्प का परिचायक है।

चरण 2: कलात्मक अभिव्यक्ति "चरण" और "पद-रज" के दृश्य बिंब समर्पण को मूर्त रूप देते हैं। "ध्रुव-सी" में उपमा अलंकार है; ध्रुव की स्थिरता से वक्ता की अटल निष्ठा और दृढ़ता स्पष्ट होती है। "अटल अड़ी" में दृढ़ता व्यक्त करने वाले दो शब्दों का साथ आना संकल्प पर विशेष बल देता है। "पड़ी" तथा "अड़ी" का तुक लय उत्पन्न करता है। सरल खड़ी बोली, छोटे चरण और प्रथम पुरुष की अभिव्यक्ति भाव को सीधा तथा आत्मीय बनाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष विनम्र समर्पण और ध्रुव के समान अडिग संकल्प का मेल इस अंश का प्रमुख सौंदर्य है।

त्वरित सुझाव: पद-रज को विनम्र समर्पण और ध्रुव को अटल निष्ठा से जोड़ें; उपमा का प्रभाव भी स्पष्ट करें।

3(क). 'वीरांगना' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि नारी की तुलना लोहे से ही क्यों की गई है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लोहे का बिंब दृढ़ता, सहनशीलता और विभिन्न रूपों में ढलने की क्षमता व्यक्त करता है।
- कविता में तपना, गलना, ढलना और गोली की गति नारी के सक्रिय संघर्ष को सामने लाते हैं।

चरण 1: लोहे और नारी का साम्य लोहे को आग में तपाया जाता है, वह गलता है और फिर आवश्यक आकार ग्रहण करता है। इसी प्रकार नारी जीवन की कठिनाइयाँ और पीड़ाएँ सहकर परिस्थितियों के अनुरूप अपने को ढालती है। उसके भीतर धैर्य और दृढ़ता बनी रहती है। इसीलिए लोहे की तुलना उसके संघर्ष, सहनशक्ति और उपयोगी सृजनशील सामर्थ्य को एक साथ व्यक्त करती है।

चरण 2: शक्ति का सक्रिय रूप कविता में नारी का चित्र केवल सहते रहने वाले व्यक्ति का नहीं है। गोली की तरह चलने का बिंब उसकी

तीव्र, निर्णायक और प्रतिरोधी शक्ति को दिखाता है। लोहा औजार और हथियार का रूप भी ग्रहण करता है; इसी तरह नारी आवश्यकता पड़ने पर अन्याय का सामना करने वाली वीरांगना बनती है। अतः तुलना उसके धैर्य और पराक्रम दोनों को उभारती है।

चरण 3: निष्कर्ष नारी लोहे की तरह कठिनाइयों में तपकर, परिस्थितियों में ढलकर और समय पर प्रखर प्रतिरोध करके अपनी शक्ति सिद्ध करती है।

त्वरित सुझाव: तुलना समझाते समय तपना, गलना, ढलना और गोली की गति को नारी के गुणों से क्रमशः जोड़ें।

3(ख). 'मैं और मेरा पिट्ठू' कविता के आधार पर क्लर्क-जीवन की विडम्बना पर प्रकाश डालिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में वास्तविक क्लर्क और उसका पिट्ठू एक ही व्यक्ति के दो मानसिक रूप हैं।
- पिट्ठू स्वतंत्र, सृजनशील और यशस्वी जीवन की अपूर्ण आकांक्षाओं को व्यक्त करता है।

चरण 1: दिनचर्या की विवशता क्लर्क साहब के संकेतों पर काम करता है, उसकी लिखी टिप्पणियाँ बार-बार सुधारी जाती हैं और घर लौटते समय उसे बस में लटककर यात्रा करनी पड़ती है। बच्चे के इलाज के लिए भी उसे अस्पताल की कतार में खड़ा होना पड़ता है। दफ्तर तथा परिवार की जिम्मेदारियाँ उसके समय और ऊर्जा को बाँध देती हैं; उसका जीवन श्रम और पराधीनता से घिरा रहता है।

चरण 2: मन की स्वतंत्रता और नौकरी का भय इसके विपरीत उसका पिट्ठू कल्पना में स्वतंत्र जीवन जीता है, कला और प्रतिष्ठा का आनंद पाता है। क्लर्क अपनी प्रतिभा को पूरा अवसर देना चाहता है, पर नौकरी में पदोन्नति और आर्थिक सुरक्षा खोने का भय उसे रोकता है। विडंबना यह है कि प्रतिभा और सपने होते हुए भी वह जीविका के बंधनों को तोड़ नहीं पाता। उसका वास्तविक और इच्छित जीवन एक-दूसरे से दूर बने रहते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष क्लर्क-जीवन की विडंबना यह है कि आर्थिक सुरक्षा की विवशता उसकी स्वतंत्रता और प्रतिभा के विकास की आकांक्षा को दबाए रखती है।

त्वरित सुझाव: वास्तविक क्लर्क की दफ्तर और घर की मजबूरियों के सामने पिट्ठू की स्वतंत्र आकांक्षाएँ रखकर उत्तर दें।

3(ग). 'ये अनाज की पूलें तेरे काँधे झूलें' कविता में कवि ने 'जन-गण के भ्राता' किसे कहा है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में किसान का श्रम पूरे समाज के भरण-पोषण का आधार है।
- भ्राता का संबोधन आत्मीयता, सहकार और मानव समुदाय से गहरे संबंध का संकेत है।

चरण 1: संबोधन की पहचान कवि ने किसान को "जन-गण के भ्राता" कहा है। अनाज की पूलें उसके कंधों पर हैं; वह खेत में श्रम करके फसल उगाता है। यह संबोधन उसके साधारण दिखने वाले श्रम में छिपे व्यापक सामाजिक महत्व को पहचानता है। वह केवल अपने परिवार के लिए नहीं, पूरे जनसमुदाय के जीवन के लिए अन्न उत्पन्न करता है।

चरण 2: संबोधन का औचित्य किसान सर्दी, गर्मी और वर्षा की कठिनाइयों का सामना करके भूमि को उपजाऊ बनाता और अन्न पैदा करता है। उसके परिश्रम से लोगों की भूख मिटती है तथा जीवन चलता है। जैसे भाई अपनापन रखकर दूसरों का सहारा बनता है, वैसे ही किसान अपने श्रम से जन-जन का पोषण करता है। इसलिए कवि उसे सबका आत्मीय सहयोगी और जीवन का निर्माता मानकर सम्मान देता है।

चरण 3: निष्कर्ष किसान पूरे समाज को अन्न देकर उसका पोषण करता है; इसी लोकहितकारी और आत्मीय भूमिका के कारण वह

"जन-गण के भ्राता" है।

त्वरित सुझाव: पहले किसान का नाम स्पष्ट करें, फिर कठिन ऋतुओं में उसके श्रम और सबके अन्न-पोषण से कारण सिद्ध करें।

4(क). निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

यद्यपि हम अनेक भाषाएँ बोलते हैं किन्तु भिन्न-भिन्न भाषाओं के भीतर बहने वाली हमारी भाव-धारा एक है तथा हम प्रायः एक ही तरह के विचारों और कथा-वस्तुओं को लेकर अपनी-अपनी बोली में साहित्य-रचना करते हैं। रामायण और महाभारत को लेकर भारत की प्रायः सभी भाषाओं के बीच अद्भुत एकता मिलेगी, क्योंकि ये दोनों काव्य सबके उपजीव्य रहे हैं। इसके सिवा, संस्कृत और प्राकृत में भारत का जो साहित्य लिखा गया था, उसका प्रभाव भी सभी भाषाओं की जड़ में काम कर रहा है। विचारों की एकता जाति की सबसे बड़ी एकता होती है। अतएव, भारतीय जनता की एकता के असली आधार भारतीय दर्शन और साहित्य हैं जो अनेक भाषाओं में लिखे जाने पर भी अंत में जाकर एक ही साबित होते हैं।

विभिन्न भाषा-भाषी होने पर भी हमारी भाव-धारा में समानता क्यों है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार गद्यांश में बताए गए साझा विचार, कथावस्तुएँ और साहित्यिक स्रोत हैं।
- भाषा की भिन्नता के भीतर भावों की समानता को साझा परंपरा से समझना है।

चरण 1: साझे विषय और कथा-स्रोत हमारी भाषाएँ अलग हैं, फिर भी उनमें समान भावधारा इसलिए बहती है कि हम प्रायः एक जैसे विचारों और कथा-वस्तुओं को अपनी-अपनी भाषा में व्यक्त करते हैं। रामायण और महाभारत भारत की अधिकांश भाषाओं के साहित्य के उपजीव्य रहे हैं। समान कथा-स्रोतों के कारण अलग-अलग भाषाओं की रचनाओं में समान भाव और आदर्श प्रकट होते हैं।

चरण 2: साझी साहित्यिक और दार्शनिक परंपरा संस्कृत और प्राकृत में रचित प्राचीन साहित्य का प्रभाव भी सभी भारतीय भाषाओं की जड़ों में विद्यमान है। गद्यांश के अनुसार भारतीय दर्शन और साहित्य जनता की एकता के वास्तविक आधार हैं। इस साझा वैचारिक पृष्ठभूमि के कारण अभिव्यक्ति की भाषा बदलने पर भी उसके भीतर के मूल विचार और भाव एक बने रहते हैं। इसी से विविधता में भावात्मक समानता संभव होती है।

चरण 3: निष्कर्ष समान विचारों, रामायण-महाभारत जैसी साझा कथा-परंपराओं तथा संस्कृत-प्राकृत साहित्य और भारतीय दर्शन के प्रभाव से हमारी भावधारा समान है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में साझा विचार, रामायण-महाभारत और संस्कृत-प्राकृत का प्रभाव अवश्य जोड़ें; गद्यांश के बाहर न जाएँ।

4(ख). निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

यद्यपि हम अनेक भाषाएँ बोलते हैं किन्तु भिन्न-भिन्न भाषाओं के भीतर बहने वाली हमारी भाव-धारा एक है तथा हम प्रायः एक ही तरह के विचारों और कथा-वस्तुओं को लेकर अपनी-अपनी बोली में साहित्य-रचना करते हैं। रामायण और महाभारत को लेकर भारत की प्रायः सभी भाषाओं के बीच अद्भुत एकता मिलेगी, क्योंकि ये दोनों काव्य सबके उपजीव्य रहे हैं। इसके सिवा, संस्कृत और प्राकृत में भारत का जो साहित्य लिखा गया था, उसका प्रभाव भी सभी भाषाओं की जड़ में काम कर रहा है। विचारों की एकता जाति की सबसे बड़ी एकता होती है। अतएव, भारतीय जनता की एकता के असली आधार भारतीय दर्शन और साहित्य हैं जो अनेक भाषाओं में लिखे जाने पर भी अंत में जाकर एक ही साबित होते हैं।

हमारी एकता के आधार किन्हें माना गया है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषाओं की विविधता के भीतर दर्शन, साहित्य और भावधारा की समानता पहचानना।
- उत्तर में मूल पाठ के प्रसंग और उसके केंद्रीय भाव का संबंध स्पष्ट करना।

चरण 1: एकता के आधार भारतीय जनता की एकता के वास्तविक आधार भारतीय दर्शन और भारतीय साहित्य हैं। वे अलग-अलग भाषाओं में व्यक्त होकर भी जीवन, समाज और संस्कृति से जुड़े समान विचारों और भावों को सामने रखते हैं। इसलिए भाषा बदलने पर भी उनके मूल संदेश में एकता बनी रहती है।

चरण 2: समानता का प्रमाण रामायण और महाभारत भारत की लगभग सभी भाषाओं के साहित्य की प्रेरणा और आधार रहे हैं। संस्कृत तथा प्राकृत में रचित साहित्य का प्रभाव भी विभिन्न भाषाओं पर पड़ा है। साझा कथा-वस्तु और चिंतन जनता को एक मानसिक तथा सांस्कृतिक धरातल पर जोड़ते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष हमारी एकता के आधार भारतीय दर्शन और साहित्य हैं, क्योंकि विभिन्न भाषाओं के भीतर समान विचार, भाव तथा सांस्कृतिक परंपराएँ विद्यमान हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले दर्शन और साहित्य का नाम दें, फिर साझा भावधारा तथा रामायण-महाभारत का प्रमाण जोड़ें।

4(ग). निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

यद्यपि हम अनेक भाषाएँ बोलते हैं किन्तु भिन्न-भिन्न भाषाओं के भीतर बहने वाली हमारी भाव-धारा एक है तथा हम प्रायः एक ही तरह के विचारों और कथा-वस्तुओं को लेकर अपनी-अपनी बोली में साहित्य-रचना करते हैं। रामायण और महाभारत को लेकर भारत की प्रायः सभी भाषाओं के बीच अद्भुत एकता मिलेगी, क्योंकि ये दोनों काव्य सबके उपजीव्य रहे हैं। इसके सिवा, संस्कृत और प्राकृत में भारत का जो साहित्य लिखा गया था, उसका प्रभाव भी सभी भाषाओं की जड़ में काम कर रहा है। विचारों की एकता जाति की सबसे बड़ी एकता होती है। अतएव, भारतीय जनता की एकता के असली आधार भारतीय दर्शन और साहित्य हैं जो अनेक भाषाओं में लिखे जाने पर भी अंत में जाकर एक ही साबित होते हैं।

'विचारों की एकता जाति की सबसे बड़ी एकता होती है', आशय स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बाहरी भिन्नताओं और आंतरिक वैचारिक समानता के अंतर को समझना।
- उत्तर में मूल पाठ के प्रसंग और उसके केंद्रीय भाव का संबंध स्पष्ट करना।

चरण 1: बाहरी विविधता भारतीय लोग अनेक भाषाएँ और बोलियाँ बोलते हैं। उनकी अभिव्यक्ति अलग-अलग होने पर भी साहित्य में व्यक्त भाव, विचार और कथा-वस्तुएँ प्रायः समान हैं। अतः भाषा की भिन्नता अपने-आप में भावों या चिंतन की भिन्नता का प्रमाण नहीं है।

चरण 2: आंतरिक जुड़ाव समान विचार लोगों को जीवन और संस्कृति के प्रति साझी दृष्टि प्रदान करते हैं। इससे वे अपने को एक

व्यापक समुदाय का अंग समझते हैं। गद्यांश में दर्शन और साहित्य इसी जुड़ाव के आधार हैं; रामायण-महाभारत तथा संस्कृत-प्राकृत की साहित्यिक परंपरा इस एकता को पुष्ट करती है।

चरण 3: निष्कर्ष कथन का आशय है कि किसी समुदाय की सबसे गहरी एकता उसके समान चिंतन और भावों में होती है। साझा विचार भाषा की भिन्नता के बावजूद लोगों को भीतर से जोड़ते हैं।

त्वरित सुझाव: आशय लिखते समय भाषा की बाहरी भिन्नता और विचारों के भीतरी साम्य का संबंध स्पष्ट करें।

अथवा

4(क). निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

देह है नाशशील और आत्मा है शाश्वत, तो आत्मा को हिलना-झुकना नहीं है और देह को निरन्तर हिलना-झुकना ही है; नहीं तो हम हो जाएंगे रामलीला के रावण की तरह जो बाँस की खपच्चियों पर खड़ा रहता है - न हिलता है न झुकता है। हमारे विचार लचीले हों, परिस्थितियों के साथ वे समन्वय साधते चलें, पर हमारे आदर्श स्थिर हों। हमारे पैरों में जीवन के मोर्चे पर डटे रहने की भी शक्ति हो और स्वयं मुड़कर हमें उठने-बैठने-लेटने में मदद देने की भी।

देह और आत्मा के स्वभाव में मूल अंतर क्या है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में आए नाशशीलता, शाश्वतता और परिवर्तनशीलता के अंतर को पहचानना।
- उत्तर में मूल पाठ के प्रसंग और उसके केंद्रीय भाव का संबंध स्पष्ट करना।

चरण 1: देह का स्वभाव देह नाशशील है। उसका अस्तित्व स्थायी नहीं है और जीवन की क्रियाओं के लिए उसे निरंतर हिलना, झुकना तथा सक्रिय रहना पड़ता है। शारीरिक गतिशीलता के अभाव को लेखक बाँस की खपच्चियों पर खड़े रामलीला के रावण के उदाहरण से स्पष्ट करता है।

चरण 2: आत्मा का स्वभाव आत्मा शाश्वत है। गद्यांश के अनुसार उसे देह की तरह निरंतर बदलने या हिलने-झुकने की आवश्यकता नहीं है। इस तुलना से लेखक जीवन में व्यवहार की गतिशीलता और आदर्शों की स्थिरता का संतुलन समझाता है। दोनों के स्वभाव का अंतर इसी नाशशील और शाश्वत होने से निकलता है। इस प्रकार देह में परिवर्तन स्वाभाविक है, जबकि आत्मा की पहचान उसके स्थायित्व से होती है।

चरण 3: निष्कर्ष देह नाशशील और गतिशील है, जबकि आत्मा शाश्वत तथा स्थिर है। देह को जीवन के व्यवहार में निरंतर हिलना-झुकना पड़ता है।

त्वरित सुझाव: देह के साथ नाशशीलता तथा गतिशीलता और आत्मा के साथ शाश्वतता तथा स्थिरता जोड़कर अंतर लिखें।

4(ख). निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

देह है नाशशील और आत्मा है शाश्वत, तो आत्मा को हिलना-झुकना नहीं है और देह को निरन्तर हिलना-झुकना ही है; नहीं तो हम हो जाएंगे रामलीला के रावण की तरह जो बाँस की खपच्चियों पर खड़ा रहता है - न हिलता है न झुकता है। हमारे विचार लचीले हों, परिस्थितियों के साथ वे समन्वय साधते चलें, पर हमारे आदर्श स्थिर हों। हमारे पैरों में जीवन के मोर्चे पर डटे रहने की भी शक्ति हो और स्वयं मुड़कर हमें उठने-बैठने-लेटने में मदद देने की भी।

"हमारे विचार लचीले हों ..... आदर्श स्थिर हों" - कथन से लेखक का क्या तात्पर्य है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- व्यवहार में समन्वय और मूल आदर्शों के प्रति दृढ़ता का संतुलन समझना।
- उत्तर में मूल पाठ के प्रसंग और उसके केंद्रीय भाव का संबंध स्पष्ट करना।

चरण 1: विचारों में लचीलापन लेखक चाहता है कि हम बदलती परिस्थितियों को समझें और उनके अनुरूप अपने विचारों तथा व्यवहार में आवश्यक परिवर्तन करें। दूसरों की बात सुनने और परिस्थिति से समन्वय करने की क्षमता जीवन को सक्रिय रखती है। हर बात पर अड़े रहना जीवन की उचित पद्धति नहीं है।

चरण 2: आदर्शों की दृढ़ता परिस्थिति के अनुसार व्यवहार बदलने का अर्थ अपने मूल आदर्शों को छोड़ देना नहीं है। सत्य और सिद्धांत के विषय में मनुष्य को दृढ़ रहना चाहिए। जैसे पैर डटे रहने के साथ आवश्यकता पड़ने पर मुड़ते भी हैं, वैसे ही जीवन में स्थिर आधार के साथ लचीला व्यवहार चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष तात्पर्य है कि मनुष्य परिस्थितियों के अनुरूप विचार और व्यवहार बदल सके, पर अपने नैतिक आदर्शों तथा सत्य के प्रति दृढ़ रहे। जीवन में लचीलेपन और दृढ़ता का संतुलन आवश्यक है।

त्वरित सुझाव: लचीलेपन को आदर्शहीनता न बताएँ; व्यवहार में समन्वय और सिद्धांतों में दृढ़ता दोनों स्पष्ट करें।

4(ग). निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

देह है नाशशील और आत्मा है शाश्वत, तो आत्मा को हिलना-झुकना नहीं है और देह को निरन्तर हिलना-झुकना ही है; नहीं तो हम हो जाएंगे रामलीला के रावण की तरह जो बाँस की खपच्चियों पर खड़ा रहता है - न हिलता है न झुकता है। हमारे विचार लचीले हों, परिस्थितियों के साथ वे समन्वय साधते चलें, पर हमारे आदर्श स्थिर हों। हमारे पैरों में जीवन के मोर्चे पर डटे रहने की भी शक्ति हो और स्वयं मुड़कर हमें उठने-बैठने-लेटने में मदद देने की भी।

अपने आसपास किन वस्तुओं को देखकर लेखक के मन में ये विचार उत्पन्न हुए ? उसने क्या निष्कर्ष निकाला ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्राकृतिक दृश्य से ग्रहण किए गए जीवन-मूल्य और दृढ़ता-जड़ता का अंतर समझना।
- उत्तर में मूल पाठ के प्रसंग और उसके केंद्रीय भाव का संबंध स्पष्ट करना।

चरण 1: विचारों का आधार लेखक ने अपने आसपास हवा में हिलते-झुकते हरे-भरे बाँझ के पेड़ और उसके निकट अचल खड़े ठूँठ को देखा। जीवित पेड़ की जड़ स्थिर थी, किंतु उसका ऊपरी भाग लचीला था। ठूँठ में ऐसा लचीलापन नहीं था। इस अंतर ने लेखक को जीवन के स्वभाव पर विचार करने की प्रेरणा दी।

चरण 2: जीवन का निष्कर्ष लेखक ने समझा कि जीवन का आधार दृढ़ होना चाहिए, लेकिन व्यवहार में परिस्थिति के अनुसार झुकने और समन्वय करने की क्षमता भी होनी चाहिए। सत्य तथा आदर्शों पर स्थिर रहना उचित है; हर स्थिति में अकड़कर खड़े रहना जड़ता है। जीवित पेड़ स्थिरता और गतिशीलता का संतुलन दिखाता है।

चरण 3: निष्कर्ष पेड़ और ठूँठ को देखकर लेखक ने निष्कर्ष निकाला कि मनुष्य आदर्शों में दृढ़ और व्यवहार में लचीला हो। उसे जड़ तथा अड़ियल बनने से बचना चाहिए।

त्वरित सुझाव: पहले बाँझ के पेड़ और ठूँठ का नाम लिखें, फिर जड़ की स्थिरता तथा शाखाओं के लचीलेपन को जीवन से जोड़ें।

5(क). 'तत्सत्' कहानी के आधार पर बताइए कि पेड़-पौधों और पशु-पक्षियों को पहले वन का होना क्यों नहीं समझ आ रहा था? बड़दादा को यह अहसास कैसे हुआ कि वन है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- व्यक्तिगत पहचान और सामूहिक अस्तित्व के अंतर को कहानी के प्रसंग से समझना।
- उत्तर में मूल पाठ के प्रसंग और उसके केंद्रीय भाव का संबंध स्पष्ट करना।

चरण 1: वन का बोध न होने का कारण पेड़-पौधे और पशु-पक्षी अपने-अपने अलग नाम तथा रूप से परिचित थे। वे वन को भी अपने समान कोई अलग प्राणी या वस्तु मानकर खोज रहे थे। उन्हें पेड़, घास और पशु तो दिखाई देते थे, लेकिन इन सबसे अलग वन नाम की कोई सत्ता दिखाई नहीं देती थी। अपनी व्यक्तिगत पहचान तक सीमित रहने के कारण वे यह नहीं समझ पा रहे थे कि उन्हीं सबके संयुक्त अस्तित्व का नाम वन है।

चरण 2: बड़दादा को समग्रता का अनुभव मनुष्यों ने समझाया कि सभी पेड़-पौधे और जीव मिलकर ही वन हैं। बड़दादा की मनुष्य से बातचीत हुई। इसके बाद मनुष्य बड़दादा की सबसे ऊँची फुनगी तक चढ़ा और वहाँ की नई पत्तियों को पुचकारा। बड़दादा ने अपनी सबसे ऊँची कलियों से चारों ओर और नीचे देखा। ऊँचाई से समूचे परिवेश को एक साथ देखने पर उन्हें वन की समग्र सत्ता का प्रत्यक्ष बोध हुआ। अब उन्होंने अलग-अलग पेड़ों और प्राणियों को किसी व्यापक अस्तित्व से अलग नहीं देखा। उन्हें अनुभव हुआ कि वन उनसे बाहर कोई अलग जीव नहीं है; वे और अन्य सभी वनस्पतियाँ तथा प्राणी उसी एक समग्र सत्ता के अंग हैं। इस अनुभव से उनकी व्यक्तिगत पहचान का आग्रह मिटा और वन के अस्तित्व के विषय में संदेह दूर हो गया।

चरण 3: निष्कर्ष पहले सभी अपनी अलग पहचान में बँधे थे, इसलिए वन की सामूहिक सत्ता नहीं समझ सके। मनुष्य से बातचीत के बाद बड़दादा ने सबसे ऊँची कलियों से चारों ओर देखा और प्रत्यक्ष अनुभव किया कि वे सब मिलकर ही वन हैं।

त्वरित सुझाव: बड़दादा के बोध का प्रसंग लिखते समय सबसे ऊँची कलियों से चारों ओर देखने और समग्र वन को पहचानने का उल्लेख करें।

5(ख). गाँधी जी भारतीय समाज के सबसे बड़े आलोचक होते हुए भी सबसे बड़े देशप्रेमी कैसे थे ? 'मेरे लिए भारतीय होने का अर्थ' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सच्चा देशप्रेम समाज के कल्याण और उसकी कमियों को दूर करने की इच्छा में प्रकट होता है।
- पाठ में गाँधी जी की आलोचना को भारत के प्रति उनके गहरे प्रेम से जोड़कर समझना आवश्यक है।

चरण 1: आलोचना का उद्देश्य समझिए गाँधी जी भारतीय समाज की कुरीतियों के बड़े आलोचक थे। वे समाज की कमजोरियों को देखकर चुप नहीं रहते थे, क्योंकि वे भारत को प्राणों से अधिक प्यार करते थे। जिसे किसी व्यक्ति या समाज से हृदय से प्रेम होता है, वह उसके दोषों को दूर करके उसे बेहतर बनाना चाहता है। इसलिए गाँधी जी की आलोचना देश की निंदा करने के लिए नहीं, उसके हित और सुधार के लिए थी।

चरण 2: देशप्रेम से उसका संबंध स्पष्ट कीजिए वे भारत की अच्छाइयों से प्रेम करते थे, पर केवल देश का गुणगान करके उसकी बुराइयों की उपेक्षा करना उचित नहीं मानते थे। सामाजिक कुरीतियाँ दूर हों और भारतीय समाज अधिक मानवीय तथा उन्नत बने, यही उनकी चिंता थी। उनकी कठोर आलोचना के पीछे समाज के प्रति अपनापन और उत्तरदायित्व था। इसीलिए सबसे बड़े आलोचक होते हुए भी वे सबसे बड़े देशप्रेमी थे। प्रेम के कारण ही वे सुधार की आवश्यकता अनुभव करते थे। दोषों को छिपा देना समाज का हित नहीं करता; उन्हें पहचानकर दूर करना ही उसके प्रति सच्ची निष्ठा है।

चरण 3: निष्कर्ष गाँधी जी की आलोचना गहरे प्रेम से उत्पन्न सुधार की इच्छा थी। भारत को बेहतर बनाने की इसी आकांक्षा ने उनकी आलोचना और देशप्रेम को एक-दूसरे का पूरक बनाया।

त्वरित सुझाव: उत्तर में आलोचना का उद्देश्य समाज-सुधार बताकर उसे हृदय के प्रेम और देशहित से अवश्य जोड़िए।

5(ग). नदियों के न रहने पर हमारी संस्कृति कैसे विच्छिन्न हो सकती है? ऐसा न होने देने के लिए हमें क्या करना चाहिए ? 'नदी बहती रहे' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नदियाँ जल का स्रोत होने के साथ भारतीय सभ्यता और संस्कृति की आधारभूमि हैं।
- सांस्कृतिक विरासत की रक्षा के लिए उसके प्राकृतिक आधार की रक्षा भी आवश्यक है।

चरण 1: संस्कृति के साथ नदियों का संबंध भारत के प्राचीन सांस्कृतिक केंद्र, तीर्थ और मंदिर नदियों के तटों पर स्थित हैं। इनके साथ हमारी धार्मिक आस्थाएँ, परंपराएँ और सामूहिक स्मृतियाँ जुड़ी हुई हैं। नदी-तटों पर विकसित जीवन में अतीत और वर्तमान का संबंध बना रहता है। इसलिए नदियों का अस्तित्व हमारे सांस्कृतिक जीवन की निरंतरता के लिए भी आवश्यक है। नदियों का समाप्त होना केवल जल-स्रोत का समाप्त होना नहीं होगा।

चरण 2: विच्छेद की आशंका और बचाव के उपाय नदियाँ न रहेंगी तो उनके किनारे स्थित सांस्कृतिक केंद्रों का जीवन और महत्त्व संकट में पड़ जाएगा। इन केंद्रों के नष्ट होने से अपनी सांस्कृतिक विरासत के साथ हमारा जीवंत संपर्क टूट सकता है। ऐसा न होने देने के लिए हमें नदियों को नष्ट और प्रदूषित होने से बचाना चाहिए। उनमें कूड़ा तथा दूषित पदार्थ न डालना, उनके जल को स्वच्छ रखना और उनका प्रवाह बना रहने देना हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है। नदी-संरक्षण इसलिए सांस्कृतिक उत्तरदायित्व भी है।

चरण 3: निष्कर्ष नदियों के नष्ट होने से नदी-तटों पर विकसित सांस्कृतिक केंद्र और उनसे जुड़ी परंपराएँ संकट में पड़ेंगी। नदियों की स्वच्छता और अस्तित्व की रक्षा करके हम अपनी संस्कृति की निरंतरता बचा सकते हैं।

त्वरित सुझाव: पहले नदी-तटों के तीर्थ-मंदिरों का उल्लेख कीजिए, फिर विनाश और प्रदूषण से बचाने के उपाय लिखिए।

5(घ). 'नीलू' के स्वभाव की ऐसी तीन विशेषताओं का उल्लेख कीजिए जिनके कारण वह अन्य कुत्तों से भिन्न लगती है। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चरित्र-चित्रण में प्रत्येक गुण को पाठ में वर्णित व्यवहार से स्पष्ट करना चाहिए।
- नीलू का ध्वनि-बोध, स्वाभिमान और छोटे जीवों के प्रति रक्षक भाव उसे विशिष्ट बनाते हैं।

चरण 1: असाधारण समझ और स्वाभिमान नीलू की पहली विशेषता उसका गहरा ध्वनि-ज्ञान था। वह अपनी स्वामिनी की आवाज और उनके निर्देश समझता था। उसका व्यवहार ऐसा लगता था मानो वह मनुष्य की बात का आशय जानता हो। दूसरी विशेषता उसका स्वाभिमान था। डाँट पड़ने पर वह रूठ जाता और मनाए बिना सामने भी नहीं आता था। इस प्रकार उसमें केवल आज्ञापालन ही नहीं, अपने सम्मान का बोध भी दिखाई देता था।

चरण 2: अन्य जीवों के प्रति स्नेह और संरक्षण तीसरी विशेषता उसकी अहिंसक और रक्षक प्रवृत्ति थी। वह छोटे पशु-पक्षियों को सताता या उन पर झपटता नहीं था, बल्कि उनसे प्रेम करता और उनकी रक्षा करता था। छोटे पक्षी-शावकों के प्रति उसकी कोमलता इस गुण को स्पष्ट करती है। दूसरे जीव उसके लिए शिकार या खेल की वस्तु नहीं थे। उनके प्रति यह स्नेह और संरक्षण का भाव उसे सामान्य हिंसक प्रवृत्ति वाले कुत्तों से अलग पहचान देता है। उसकी समझ, सम्मान की भावना और करुणा मिलकर ऐसा व्यक्तित्व बनाती हैं जिसमें मनुष्यों जैसी संवेदनशीलता दिखाई देती है।

चरण 3: निष्कर्ष नीलू का विस्तृत ध्वनि-ज्ञान, स्वाभिमान और छोटे पशु-पक्षियों के प्रति अहिंसक रक्षक-भाव उसकी तीन प्रमुख विशेषताएँ थीं। इन गुणों से उसका संवेदनशील व्यक्तित्व उभरता है।

त्वरित सुझाव: तीन अलग गुण चुनिए और हर गुण के साथ नीलू के व्यवहार का एक उदाहरण जोड़िए।

6(क). 'विविधा : भाग-2' के आधार पर : पुरुषोत्तमदास टंडन और फौजियों के बीच टकराव का क्या कारण था ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सार्वजनिक नियमों और करों का पालन सभी के लिए समान रूप से आवश्यक है।
- टकराव का कारण जल-कर का बकाया और उसके भुगतान की माँग थी।

चरण 1: विवाद का मूल कारण फौजी अनेक वर्षों से नगरपालिका को पानी का कर नहीं दे रहे थे। छावनी के अधिकारी अपना विशेष अधिकार मानकर इस भुगतान से बचना चाहते थे। पुरुषोत्तमदास टंडन इस छूट को स्वीकार नहीं करते थे। उनके लिए नगरपालिका के नियम सब पर समान रूप से लागू होते थे।

चरण 2: टकराव कैसे उत्पन्न हुआ टंडन जी ने बकाया जल-कर जमा करने का निर्देश दिया और भुगतान न होने पर छावनी का पानी बंद करने का नोटिस दिया। छावनी के अधिकारियों ने इसका विरोध किया। इस प्रकार जल-कर की वसूली पर टंडन जी की दृढ़ता और फौजी अधिकारियों का विरोध टकराव का कारण बना। यह प्रसंग टंडन जी की निर्भीकता और नियमों के प्रति दृढ़ निष्ठा दिखाता है।

चरण 3: निष्कर्ष नगरपालिका का बकाया जल-कर न चुकाने और पानी बंद करने के नोटिस का विरोध करने के कारण फौजियों तथा टंडन जी के बीच टकराव हुआ।

त्वरित सुझाव: कारण बताते समय बकाया जल-कर, पानी बंद करने का नोटिस और अधिकारियों का विरोध क्रम से लिखिए।

6(ख). 'विविधा : भाग-2' के आधार पर : मूँगा गूँगा की क्या विशेषता थी ? वह गाँव छोड़कर क्यों चला गया ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पात्र की विशेषता और गाँव छोड़ने के कारण को अलग-अलग स्पष्ट करना आवश्यक है।
- उसकी पहचान कुशल तैराकी और डूबते लोगों की प्राणरक्षा से जुड़ी थी।

चरण 1: विशेषता बताइए मूँगा गूँगा बहुत कुशल तैराक था। उसने अनेक डूबते हुए लोगों को बचाया था। इसी कला के कारण गाँव के लोग उसे जानते और उसकी प्रशंसा करते थे। दूसरों की जान बचाने की क्षमता उसके लिए गौरव तथा अपने जीवन की सार्थकता का आधार थी।

चरण 2: गाँव छोड़ने का कारण एक डूबते लड़के को बचाते समय उसे अनुभव हुआ कि अब उसके शरीर में पहले जैसी शक्ति नहीं रही। तैरने और बचाने में कठिनाई होने से उसे अपनी कला की प्रतिष्ठा खोने का डर लगा। वह नहीं चाहता था कि लोग उसकी पूर्व कीर्ति के स्थान पर उसकी असमर्थता देखें। इसी बदनामी के भय से वह गाँव छोड़कर चला गया।

चरण 3: निष्कर्ष मूँगा गूँगा की विशेषता उत्कृष्ट तैराकी और डूबते लोगों को बचाना थी। शक्ति घटने पर अपनी कला की बदनामी और अर्जित प्रतिष्ठा खोने के डर से उसने गाँव छोड़ दिया।

त्वरित सुझाव: गाँव छोड़ने का कारण केवल बुढ़ापा न लिखिए; घटती शक्ति से पैदा हुआ प्रतिष्ठा खोने का भय भी बताइए।

6(ग). 'विविधा : भाग-2' के आधार पर : अरुमुगम क्यों प्रसिद्ध हो गया ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सैनिक का यश देशरक्षा में दिखाए गए साहस और आत्मबलिदान से जुड़ा होता है।
- अरुमुगम की प्रसिद्धि का कारण युद्ध में वीरता और वीर चक्र से सम्मानित होना था।

चरण 1: युद्ध में साहस का परिचय अरुमुगम ने श्रीनगर में पाकिस्तान के आक्रमण का सामना करते हुए अत्यंत वीरता दिखाई। शत्रु के विमानों के सामने उसने अपने कर्तव्य से पीछे हटने के बजाय डटकर रक्षा की। वह दुश्मन के विमानों को मार गिराने और उन्हें भगाने में सफल हुआ। उसकी प्रसिद्धि का आधार यही असाधारण पराक्रम था।

चरण 2: बलिदान और सम्मान देश की रक्षा करते हुए अरुमुगम वीरगति को प्राप्त हुआ। उसने अपने प्राणों की चिंता से ऊपर राष्ट्र की सुरक्षा को रखा। उसकी वीरता और आत्मबलिदान ने लोगों के मन में उसके प्रति गहरा सम्मान उत्पन्न किया। इस साहस के लिए उसे वीर चक्र से सम्मानित किया गया। इसीलिए उसका नाम एक वीर देशरक्षक के रूप में प्रसिद्ध हुआ।

चरण 3: निष्कर्ष श्रीनगर में पाकिस्तानी विमानों का वीरतापूर्वक सामना करने, उन्हें मार गिराने और भगाने तथा देशरक्षा में बलिदान देने के कारण अरुमुगम प्रसिद्ध हुआ। उसे वीर चक्र से सम्मानित किया गया।

त्वरित सुझाव: उत्तर में युद्ध-स्थल, शत्रु विमानों के विरुद्ध पराक्रम, बलिदान और वीर चक्र का उल्लेख कीजिए।

6(घ). 'विविधा : भाग-2' के आधार पर : 'सत्यकिरण' एकांकी के द्वारा लेखक क्या संदेश देना चाहता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सामाजिक व्यंग्य सम्मानित दिखाई देने वाले व्यक्तियों के आचरण की विसंगतियों को उजागर करता है।
- 'सत्यकिरण' का केंद्रीय संकेत सार्वजनिक छवि और वास्तविक चरित्र के बीच अन्तर की ओर है।

चरण 1: प्रतिष्ठा के पीछे छिपे दोहरे चरित्र का उद्घाटन 'सत्यकिरण' के द्वारा लेखक यह स्पष्ट करना चाहता है कि समाज में प्रतिष्ठित कहलाने वाले अनेक व्यक्तियों का वास्तविक जीवन उनकी सार्वजनिक छवि के बिल्कुल विपरीत होता है। बाहर से वे आदर्शवादी, परोपकारी और जनहितैषी दिखाई देते हैं, किन्तु उनका निजी व्यवहार स्वार्थ और नैतिक दुर्बलता से भरा हो सकता है। लेखक इसी दोहरेपन और कथनी-करनी के अन्तर पर व्यंग्य करता है।

चरण 2: दिखावटी समाज-सेवा से सावधान करने का संदेश नेताओं और समाजसेवकों के आचरण के माध्यम से एकांकी बताता है कि सेवा का नाम लेना और वास्तव में सेवा करना अलग बातें हैं। कुछ लोग समाज-सेवा के बहाने प्रतिष्ठा, निजी लाभ और मौज-मस्ती चाहते हैं। अपने स्वार्थ के लिए पक्ष बदलना उनकी सिद्धान्तहीनता को प्रकट करता है। इसलिए केवल पद, प्रसिद्धि अथवा मीठे आदर्शवादी भाषणों से प्रभावित होने के बजाय व्यक्ति के वास्तविक आचरण को परखना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक प्रतिष्ठित व्यक्तियों, नेताओं और समाजसेवकों के दोहरे चरित्र तथा दिखावटी सेवा का पर्दाफाश करता है। संदेश है कि कथनी और करनी में एकता तथा नि:स्वार्थ आचरण ही सच्ची नैतिकता की कसौटी हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर का केंद्र 'सार्वजनिक छवि बनाम वास्तविक चरित्र' रखें और उसके साथ स्वार्थ तथा दिखावटी सेवा का उल्लेख करें।

7. भारतीय संगीत को पण्डित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर के योगदान पर प्रकाश डालिए ? [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पलुस्कर का योगदान संगीत-साधना के साथ संगीत को सामाजिक प्रतिष्ठा और व्यवस्थित शिक्षा दिलाने में है।
- उत्तर में संगीत का जनप्रसार, शिक्षण-संस्था, शिक्षण-पद्धति और राष्ट्रीय चेतना से उसका सम्बन्ध स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: संगीत को सम्मान और व्यापक आधार पण्डित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर ने भारतीय शास्त्रीय संगीत को राजदरबारों और सीमित आश्रयदाताओं के घेरे से निकालकर सामान्य समाज तक पहुँचाया। उन्होंने संगीत को केवल मनोरंजन अथवा आजीविका का साधन नहीं, आत्मिक उन्नति की साधना माना। अपने संयमी जीवन, परिश्रम और शुद्ध आचरण से उन्होंने संगीतकार की गरिमा बढ़ाई और संगीत सीखने के प्रति शिक्षित समाज की झिझक दूर की।

चरण 2: संगीत-शिक्षा को संस्थागत रूप उन्होंने लाहौर में गान्धर्व महाविद्यालय की स्थापना की और संगीत की व्यवस्थित शिक्षा का मार्ग खोला। इससे गुरु अथवा किसी विशेष परिवार तक सीमित ज्ञान अधिक विद्यार्थियों को मिलने लगा। उन्होंने संगीत के शिक्षण को अनुशासन, नियमित अभ्यास और सैद्धान्तिक अध्ययन से जोड़ा। स्वरलिपि तथा संगीत सम्बन्धी पुस्तकों के माध्यम से उन्होंने सीखने और सिखाने की सामग्री भी सुलभ बनाई। उनके प्रशिक्षित शिष्यों ने इस कार्य को आगे बढ़ाया।

चरण 3: भक्ति और राष्ट्रीय चेतना का प्रसार पलुस्कर ने भजनों और सार्वजनिक संगीत-प्रस्तुतियों के द्वारा संगीत को जनजीवन से जोड़ा। उनकी गायकी में भक्ति, आत्मसम्मान और देशप्रेम का भाव था। राष्ट्रीय सभाओं में उनके गायन से संगीत सामूहिक भावना जगाने का माध्यम बना। इस प्रकार उन्होंने कलाकार तैयार करने के साथ ऐसे श्रोता भी तैयार किए जो संगीत का आदर और उसकी साधना का महत्त्व समझते थे।

चरण 4: निष्कर्ष पलुस्कर ने संगीत को सामाजिक सम्मान दिया, उसकी शिक्षा को संगठित किया और उसे जनसाधारण, भक्ति तथा राष्ट्रीय चेतना से जोड़ा। इसलिए भारतीय संगीत के पुनरुत्थान में उनका योगदान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

त्वरित सुझाव: योगदान को चार सूत्रों में याद रखें—सम्मान, गान्धर्व महाविद्यालय, व्यवस्थित शिक्षण और संगीत का जनप्रसार।

अथवा

7. भगिनी निवेदिता के व्यक्तित्व की चार विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चरित्र-चित्रण में गुण के साथ उसे स्पष्ट करने वाला कार्य या जीवन-प्रसंग देना आवश्यक है।
- भगिनी निवेदिता के व्यक्तित्व में भारतप्रेम, सेवाभाव, नारी-शिक्षा के प्रति समर्पण और निर्भीक आत्मबल विशेष रूप से दिखाई देते हैं।

चरण 1: भारत के प्रति आत्मीयता और समर्पण भगिनी निवेदिता जन्म से विदेशी थीं, फिर भी उन्होंने भारत को अपना देश और भारतीयों को अपना परिवार माना। स्वामी विवेकानन्द से प्रेरणा पाकर उन्होंने भारत की संस्कृति, आध्यात्मिक परम्परा और जीवन-दृष्टि को समझा तथा अपनाया। उनका भारतप्रेम केवल प्रशंसा तक सीमित नहीं था; वे भारतीय समाज के उत्थान के लिए कार्य करने लगीं। उनके लिए समर्पण का अर्थ अपना सुख और सुविधा छोड़कर जनकल्याण का दायित्व स्वीकार करना था।

चरण 2: करुणा और निःस्वार्थ सेवाभाव वे पीड़ित और उपेक्षित लोगों की सहायता के लिए सदैव तैयार रहती थीं। कलकत्ता में प्लेग के समय रोगियों की सेवा और सफाई के कार्य में उनका सक्रिय होना उनकी करुणा तथा साहस का परिचय देता है। वे सेवा को केवल उपदेश का विषय नहीं मानती थीं। दूसरों की पीड़ा को अपना दुःख समझकर उसे दूर करने का प्रयत्न उनके व्यक्तित्व का प्रमुख गुण था।

चरण 3: नारी-शिक्षा के लिए कर्मठता उन्होंने भारतीय स्त्रियों और बालिकाओं की शिक्षा को समाज के विकास के लिए आवश्यक समझा। बालिकाओं के लिए विद्यालय चलाकर उन्होंने इस विचार को व्यवहार में उतारा। सामाजिक संकोच और कठिनाइयों के बीच भी वे धैर्य से काम करती रहीं। उनका उद्देश्य बालिकाओं को केवल अक्षरज्ञान देना नहीं, उनमें आत्मविश्वास और अपने जीवन को सँवारने की क्षमता पैदा करना भी था।

चरण 4: निर्भीकता और दृढ़ आत्मबल निवेदिता बाधाओं से विचलित होने वाली नहीं थीं। अपरिचित देश में नई परिस्थितियों को अपनाना, सेवा में कठिन श्रम करना और भारत के गौरव के पक्ष में खड़ा होना उनके दृढ़ निश्चय को दिखाता है। भारतीय संस्कृति और प्रतिभा के प्रति उनका विश्वास स्वाभिमान से जुड़ा था। अपने विश्वास के अनुसार लगातार कार्य करने की यही शक्ति उन्हें प्रेरणादायक व्यक्तित्व बनाती है।

चरण 5: निष्कर्ष भारत के प्रति पूर्ण समर्पण, करुणामय सेवा, नारी-शिक्षा के लिए कर्मठता और निर्भीक आत्मबल भगिनी निवेदिता के व्यक्तित्व की चार प्रमुख विशेषताएँ हैं।

त्वरित सुझाव: चार गुण अलग-अलग लिखें और हर गुण को एक ठोस कार्य से जोड़ें; केवल विशेषणों की सूची से चरित्र-चित्रण पूरा नहीं होता।

8(क). 'विराटा की पद्मिनी' के आधार पर : देवीसिंह कौन था ? लोचनसिंह उससे नाराज़ होकर क्यों चला गया ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पात्र-परिचय को उपन्यास की घटनाओं से जोड़ें।
- लोचनसिंह के क्रोध का कारण युद्ध के अंत में हुई संधि और उसके बाद का व्यवहार है।

चरण 1: देवीसिंह का परिचय देवीसिंह एक वीर बुंदेला ठाकुर था। पालर के संघर्ष में उसने राजा नायकसिंह की प्राणरक्षा की थी। उसके साहस से प्रसन्न होकर नायकसिंह ने उसे संरक्षण और सम्मान दिया। आगे चलकर वह दलीपनगर का राजा बना। इस प्रकार उसकी वीरता ने उसे साधारण स्थिति से राजसत्ता तक पहुँचाया।

चरण 2: लोचनसिंह के असंतोष का कारण युद्ध के अंत में देवीसिंह और अलीमर्दान के बीच लड़ाई बंद करने की सहमति हो गई थी। उसी समय अलीमर्दान के एक सरदार की अपमानजनक बात सुनकर लोचनसिंह ने उसे मार डाला। देवीसिंह ने संधि के बाद हुए इस प्रहार पर उसे कठोर शब्दों में फटकारा और वहाँ से निकल जाने को कहा। लोचनसिंह को लगा कि उसकी सेवाओं के बदले उसका अपमान हुआ है। वह राजा को कृतघ्न समझकर अपना सम्मानसूचक फेंटा फेंककर चला गया।

चरण 3: कारण और परिणाम का संबंध इस प्रसंग में राजा की चिंता संधि को निभाने और आगे का रक्तपात रोकने की है, जबकि लोचनसिंह अपने पराक्रम और सेवाओं का सम्मान चाहता है। दोनों की भिन्न दृष्टियाँ टकराती हैं। इसलिए उसके चले जाने का तात्कालिक कारण राजकीय फटकार से हुआ अपमान है।

चरण 4: निष्कर्ष देवीसिंह दलीपनगर का वीर राजा था। संधि के बाद शत्रुपक्ष के सरदार को मारने पर मिली कठोर फटकार से आहत होकर लोचनसिंह ने उसका साथ छोड़ दिया।

त्वरित सुझाव: पहले देवीसिंह का परिचय दें, फिर संधि, सरदार की हत्या और फटकार का क्रम लिखें।

8(ख). 'विराटा की पद्मिनी' के आधार पर : विराटा की पद्मिनी किसे कहा गया है और क्यों ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नाम की सार्थकता बताते समय संबोधित पात्र और नामकरण का आधार दोनों स्पष्ट किए जाते हैं।
- कुमुद के सौंदर्य के साथ उसकी गरिमा और लोकप्रतिष्ठा का भी संबंध है।

चरण 1: उपाधि का पात्र वृंदावनलाल वर्मा के उपन्यास में कुमुद को 'विराटा की पद्मिनी' कहा गया है। वही उपन्यास की मुख्य स्त्री पात्र है। उसके व्यक्तित्व और सौंदर्य के आकर्षण से कथा की अनेक घटनाएँ जुड़ती हैं। उसके प्रति लोगों की श्रद्धा इतनी प्रबल है कि वे उसे सामान्य युवती के स्थान पर देवी का रूप मानते हैं।

चरण 2: पद्मिनी नाम का आधार कुमुद अत्यंत रूपवती है। उसके सौंदर्य की ख्याति दूर तक पहुँचती है। सौंदर्य की दृष्टि से उसकी तुलना चित्तौड़ की प्रसिद्ध पद्मिनी से की गई है। विराटा से उसके संबंध के कारण इस नाम के साथ विराटा जुड़ गया है। किंतु उसकी महत्ता केवल बाहरी सुंदरता में नहीं है; अपने सम्मान की रक्षा के लिए उसका दृढ़ संकल्प और बलिदान भी उसे विशिष्ट बनाता है। इसलिए यह उपाधि उसके सौंदर्य तथा गरिमापूर्ण व्यक्तित्व दोनों को व्यक्त करती है।

चरण 3: उत्तर की संगति इस प्रश्न का उत्तर केवल सुंदरता की प्रशंसा तक सीमित नहीं रखना चाहिए। पहले यह पहचानना आवश्यक है कि उपाधि किस पात्र के लिए प्रयुक्त हुई है। इसके बाद उस पात्र का संबंधित स्थान और तुलना का आधार बताने से शीर्षक तथा पात्र के बीच संबंध स्पष्ट होता है।

चरण 4: निष्कर्ष कुमुद ही 'विराटा की पद्मिनी' है। विराटा से संबंध और पद्मिनी के समान अनुपम सौंदर्य इस नाम के मुख्य आधार हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में कुमुद का नाम स्पष्ट लिखकर विराटा तथा पद्मिनी, दोनों शब्दों की सार्थकता समझाएँ।

8(ग). 'विराटा की पद्मिनी' के आधार पर : 'पंचनदा' कहाँ है ? उसका यह नाम क्यों पड़ा ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- स्थान-परिचय में भौगोलिक क्षेत्र और नामकरण का कारण अलग-अलग स्पष्ट किए जाते हैं।
- पंचनदा नाम में पाँच नदियों के संगम का अर्थ निहित है।

चरण 1: पंचनदा का स्थान पंचनदा बुंदेलखंड क्षेत्र का एक संगम-स्थल है। उपन्यास के आंचलिक परिवेश में इस स्थान का उल्लेख मिलता है। यह ऐसा क्षेत्र है जहाँ पाँच नदियों की धाराएँ एकत्र होती हैं। इसलिए इसे केवल किसी एक नदी का घाट समझना उचित नहीं; इसकी पहचान अनेक नदियों के मिलन-स्थल के रूप में है।

चरण 2: नाम पड़ने का कारण यहाँ यमुना, चंबल, सिंधु, पहुज और कुमारी नदियों का संगम होता है। पाँच नदियों के इस पवित्र मिलन के कारण स्थान का नाम 'पंचनदा' पड़ा। नाम में आया 'पंच' पाँच की संख्या का बोध कराता है और नदियों का यह समूह उसके दूसरे अंश को सार्थक बनाता है। यहाँ का जल, बालू और तटवर्ती हरियाली इस संगम-क्षेत्र के प्राकृतिक रूप को सामने लाते हैं। उत्तर का मुख्य आधार नदियों की संख्या और उनका एक स्थान पर मिलना है।

चरण 3: नाम और स्थान का संबंध उत्तर के दोनों अंश परस्पर जुड़े हुए हैं। स्थान बताते समय संगम-क्षेत्र का उल्लेख होता है और नाम का कारण बताते समय उसी संगम में मिलने वाली पाँच नदियों का। इसलिए केवल क्षेत्र का नाम या केवल शब्द का अर्थ लिखने के बजाय दोनों बातें साथ प्रस्तुत करनी चाहिए।

चरण 4: निष्कर्ष बुंदेलखंड में पाँच नदियों के संगम का क्षेत्र पंचनदा कहलाता है। यमुना, चंबल, सिंधु, पहुज और कुमारी के मिलन से उसका यह नाम पड़ा।

त्वरित सुझाव: स्थान के साथ पाँचों नदियों के नाम लिखें; पंचनदा को पाँच अलग-अलग गाँवों का समूह न बताएँ।

9. 'विराटा की पद्मिनी' उपन्यास के आधार पर कुमुद के चरित्र की चार प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चरित्र-चित्रण में प्रत्येक विशेषता के समर्थन में पात्र का व्यवहार या कोई कथाप्रसंग दिया जाता है।
- कुमुद की विशेषताओं में सौंदर्य, करुणा, विवेक और स्वाभिमान की केंद्रीय भूमिका है।

चरण 1: असाधारण सौंदर्य और लोकसम्मान कुमुद अनुपम सुंदरी है। उसके रूप की ख्याति दूर-दूर तक फैली हुई है और लोग उसे दुर्गा का अवतार समझते हैं। उसका सौंदर्य राजाओं तक को आकृष्ट करता है। इसी कारण वह उपन्यास की घटनाओं के केंद्र में है और विराटा की पद्मिनी के नाम से प्रतिष्ठित होती है।

चरण 2: सरलता और मानवीय अपनापन लोकपूज्य होने पर भी वह दूसरों से सहज आत्मीयता चाहती है। गोमती को अपनी छोटी बहन बनाना और उसके साथ एक कोठरी में रहना उसके स्नेहशील स्वभाव का परिचायक है। वह ऊँचे आसन पर बैठी हुई पूज्य मूर्ति बने रहने के बजाय मनुष्य के रूप में दूसरों के निकट आना चाहती है।

चरण 3: विवेक और करुणा कुमुद स्वयं को देवी मानने की धारणा से सहमत नहीं है। वह अपने को दुर्गा की पुजारिन बताती है। पालर का रक्तपात रोकने की उसकी इच्छा उसके करुणामय स्वभाव को व्यक्त करती है। इस प्रकार उसमें धार्मिक श्रद्धा के साथ मानवीय विवेक भी है।

चरण 4: स्वाभिमान और साहस विपत्ति के अंतिम क्षण में भी कुमुद अपनी गरिमा के प्रति अडिग रहती है। अलीमर्दान के अधिकार में पड़ने के बजाय वह बेतवा की धारा में कूदकर प्राण त्याग देती है। यह दुखांत प्रसंग उसके आत्मसम्मान, चारित्रिक दृढ़ता और संकट में निर्णय लेने के साहस को सामने लाता है।

चरण 5: निष्कर्ष कुमुद सौंदर्यवती, स्नेहशील, विवेकपूर्ण और स्वाभिमानी नायिका है। गोमती के प्रति अपनापन, रक्तपात का विरोध और अंतिम बलिदान उसके चरित्र को प्रभावशाली बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: चार अलग विशेषताएँ लिखें और हर विशेषता को कुमुद के किसी व्यवहार या प्रसंग से प्रमाणित करें।

अथवा

9. 'विराटा की पद्मिनी' उपन्यास की रचना के पीछे लेखक का क्या उद्देश्य रहा होगा ? तर्क-संगत उत्तर दीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ऐतिहासिक उपन्यास में अतीत की कथा के माध्यम से सामाजिक जीवन, मानवीय मूल्यों और राष्ट्रीय चेतना का चित्रण होता है।
- रचना का उद्देश्य पात्रों के आचरण और घटनाओं के परिणाम से स्पष्ट किया जाना चाहिए।

चरण 1: नारी के स्वाभिमान की प्रतिष्ठा वृंदावनलाल वर्मा ने कुमुद के माध्यम से भारतीय नारी की गरिमा, आत्मसम्मान और साहस को प्रतिष्ठित किया है। उसका महत्त्व केवल सौंदर्य के कारण नहीं है; संकट का सामना करते हुए अपने सम्मान की रक्षा करने का संकल्प उसे विशिष्ट बनाता है। इस प्रकार लेखक स्त्री को भोग की वस्तु समझने वाली दृष्टि के विरुद्ध उसका स्वतंत्र मानवीय व्यक्तित्व उभारते हैं।

चरण 2: सामंती दुर्बलताओं का उद्घाटन कथा में सत्ता के संघर्ष, व्यक्तिगत स्वार्थ और रूप के प्रति आसक्ति सामाजिक अशांति का कारण बनते हैं। लेखक दिखाते हैं कि जब शासक अपने दायित्व की अपेक्षा निजी इच्छाओं को महत्त्व देते हैं, तब जनजीवन और मानवीय संबंध संकट में पड़ते हैं। अत: रचना का एक उद्देश्य शासक वर्ग की दुर्बलताओं और नैतिक पतन के दुष्परिणाम दिखाना भी है।

चरण 3: इतिहास से नैतिक प्रेरणा बुंदेलखंड की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में साहस, त्याग, कर्तव्यनिष्ठा और आत्मसम्मान को उजागर करके लेखक पाठक में अपने अतीत के प्रति रुचि तथा गौरवबोध जगाते हैं। यह गौरव अतीत की प्रत्येक बात का अंधसमर्थन नहीं है; कथा आंतरिक कलह और स्वार्थ से सावधान भी करती है। इसीलिए मनोरंजन के साथ चरित्रनिर्माण और समाज को नैतिक दिशा देना लेखक का संभावित उद्देश्य माना जा सकता है।

चरण 4: निष्कर्ष लेखक का उद्देश्य कुमुद के चरित्र द्वारा नारी के स्वाभिमान और साहस की प्रतिष्ठा, सामंती स्वार्थों की आलोचना तथा ऐतिहासिक कथा के माध्यम से त्याग, कर्तव्य और नैतिक चेतना की प्रेरणा देना रहा होगा।

त्वरित सुझाव: उद्देश्य के प्रत्येक बिंदु को पात्रों के आचरण या कथा में दिखाए गए सामाजिक संघर्ष से जोड़ें।

10. निम्नलिखित वाक्य में रेखांकित पदों का व्याकरणिक परिचय दीजिए :

यह हमारी एकता का दूसरा प्रमाण है। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पद-परिचय में शब्द का भेद, लिंग, वचन और वाक्य में उसका संबंध बताया जाता है।
- विशेषण का परिचय उसके विशेष्य के संदर्भ में और संज्ञा का परिचय उसके अर्थ तथा कारक के अनुसार दिया जाता है।

चरण 1: हमारी का परिचय हमारी : पुरुषवाचक सर्वनाम हम से बना संबंधवाचक सार्वनामिक विशेषण; उत्तम पुरुष से संबंध सूचित करता है। इसका स्त्रीलिंग, एकवचन रूप विशेष्य एकता के अनुरूप है। यह बताता है कि एकता किसकी है। यहाँ हमारी स्वतंत्र कर्ता नहीं, एकता की विशेषता बताने वाला पद है।

चरण 2: एकता का परिचय एकता : भाववाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन। यह एक होने के भाव का बोध कराती है। यह किसी मूर्त वस्तु का नाम नहीं है। हमारी एकता का पदबंध में का संबंधसूचक चिह्न एकता का प्रमाण से संबंध स्थापित करता है; इसलिए एकता संबंध कारक में है। का का पुल्लिंग रूप अगले पद प्रमाण के अनुरूप है, उससे एकता का लिंग नहीं बदलता।

चरण 3: दूसरा का परिचय दूसरा : निश्चित संख्यावाचक विशेषण का क्रमवाचक भेद; पुल्लिंग, एकवचन। इसका विशेष्य प्रमाण है। यह प्रमाणों की कुल संख्या नहीं, प्रस्तुत प्रमाण का क्रम बताता है। इसलिए इसे गुणवाचक या परिमाणवाचक विशेषण नहीं कहा जाएगा।

चरण 4: निष्कर्ष हमारी : संबंधवाचक सार्वनामिक विशेषण, स्त्रीलिंग एकवचन; एकता : भाववाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग एकवचन, संबंध कारक; दूसरा : क्रमवाचक निश्चित संख्यावाचक विशेषण, पुल्लिंग एकवचन, विशेष्य प्रमाण।

त्वरित सुझाव: विशेषण के लिंग-वचन उसके विशेष्य से मिलाएँ और दूसरा जैसे पदों में संख्या तथा क्रम का अंतर पहचानें।

11(क). निर्देशानुसार वाच्य-परिवर्तन कीजिए : ऊपर एक जगह हमने भूगोल को दोष दिया है। (कर्मवाच्य में) [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कर्मवाच्य में क्रिया का संबंध कर्म से होता है और कर्ता के साथ द्वारा अथवा से लगाया जाता है।
- मूल वाक्य का अर्थ और काल सुरक्षित रखते हुए क्रिया के साथ जाना का उपयुक्त रूप जोड़ा जाता है।

चरण 1: कर्ता और कर्म पहचानें मूल वाक्य में हमने कर्ता है और दोष देना क्रिया है। भूगोल को दोष देने की बात कही गई है। परिवर्तन में हमने के स्थान पर हमारे द्वारा आएगा; ऊपर एक जगह जैसे स्थानसूचक पद यथावत् रहेंगे।

चरण 2: क्रिया का परिवर्तन करें दिया है का कर्मवाच्य रूप दिया गया है होगा। दोष पुल्लिंग एकवचन है, इसलिए दिया गया है उपयुक्त है। दिया जाता है लिखने से मूल काल बदल जाएगा; इस कारण वह रूप यहाँ स्वीकार्य नहीं होगा।

चरण 3: निष्कर्ष ऊपर एक जगह हमारे द्वारा भूगोल को दोष दिया गया है।

त्वरित सुझाव: हमने को हमारे द्वारा और दिया है को दिया गया है करें; स्थानसूचक पद तथा मूल काल बनाए रखें।

11(ख). निर्देशानुसार वाच्य-परिवर्तन कीजिए : वह आसानी से पहचान लिया जाएगा। (कर्तृवाच्य में) [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कर्तृवाच्य में कर्ता प्रमुख होता है और वही क्रिया करने वाला स्पष्ट किया जाता है।
- कर्मवाच्य में छिपे अनिश्चित कर्ता के लिए लोग जैसे सामान्य कर्ता का प्रयोग किया जा सकता है।

चरण 1: कर्मवाच्य की रचना पहचानें वह आसानी से पहचान लिया जाएगा में वह पहचाने जाने वाला व्यक्ति है। जाएगा कर्मवाच्य का सूचक है। पहचानने वाला स्पष्ट नहीं है, इसलिए कर्तृवाच्य में सामान्य कर्ता लोग रखा जा सकता है।

चरण 2: कर्ता के अनुसार क्रिया बनाएँ वह को उसे करके कर्म बनाया जाएगा। लोग बहुवचन कर्ता होने के कारण पहचान लेंगे आएगा। आसानी से यथावत् रहेगा और भविष्यत् काल भी सुरक्षित रहेगा। इस परिवर्तन में पहचाने जाने वाला व्यक्ति वही रहता है।

चरण 3: निष्कर्ष लोग उसे आसानी से पहचान लेंगे।

त्वरित सुझाव: जाएगा हटाते समय नया कर्ता अवश्य रखें और वह जैसे कर्मप्रधान पद को उसे में बदलें।

11(ग). निर्देशानुसार वाच्य-परिवर्तन कीजिए : अब थोड़ी देर टहल लें। (भाववाच्य में) [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाववाच्य में क्रिया का भाव प्रधान होता है; अकर्मक क्रिया का रूप सामान्यतः पुल्लिंग एकवचन रहता है।
- टहलना अकर्मक क्रिया है; भाववाच्य में टहला जाए का प्रयोग किया जाता है।

चरण 1: क्रिया और अभिप्राय पहचानें टहल लें में कर्ता हम निहित है और टहलने का प्रस्ताव व्यक्त हुआ है। टहलना अकर्मक है, इसलिए यहाँ किसी कर्म को प्रधान बनाने का प्रश्न नहीं है। अब और थोड़ी देर समय का बोध कराते हैं।

चरण 2: भावप्रधान रूप बनाएँ टहल लें के स्थान पर टहला जाए लिखेंगे। इससे क्रिया का भाव प्रधान होता है और प्रस्ताव का आशय बना रहता है। टहली जाए या टहले जाएँ लिखना अनुचित है, क्योंकि भाववाच्य की क्रिया यहाँ पुल्लिंग एकवचन होगी।

चरण 3: निष्कर्ष अब थोड़ी देर टहला जाए।

त्वरित सुझाव: अकर्मक टहलना का भाववाच्य टहला जाए बनता है; समयसूचक अब थोड़ी देर को बनाए रखें।

12(क). किन्हीं दो पदों का विग्रह कर समास का नाम लिखिए :

स्वतंत्र देश, चतुर्भुज, उत्तर-दक्षिण [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समास का भेद पहचानने के लिए विग्रह में पदों का आपसी संबंध और पूरे पद का अर्थ देखा जाता है।
- बहुव्रीहि में पद किसी अन्य व्यक्ति या वस्तु का बोध कराता है; द्वंद्व में दोनों पद प्रधान होते हैं।

चरण 1: स्वतंत्र देश का विग्रह स्वतंत्र देश : स्वतंत्र है जो देश, अथवा स्वतंत्र है जो वह देश। यह कर्मधारय समास है। स्वतंत्र विशेषण है और देश उसका विशेष्य; दोनों एक ही देश का बोध कराते हैं। इसमें कोई तीसरा अर्थ प्रधान नहीं होता। केवल दो शब्द होने से इसे द्वंद्व नहीं कहा जा सकता।

चरण 2: चतुर्भुज का विग्रह चतुर्भुज : चार भुजाएँ हैं जिसकी, अर्थात् विष्णु। इस अर्थ में बहुव्रीहि समास है, क्योंकि पूरा पद चार भुजाओं वाले अन्य व्यक्तित्व का बोध कराता है। यदि चतुर्भुज का प्रयोग ज्यामितीय आकृति के लिए हो, तो चार भुजाओं का समाहार विग्रह करके द्विगु माना जाता है। यहाँ परंपरागत बहुव्रीहि अर्थ प्रमुख है।

चरण 3: उत्तर-दक्षिण का विग्रह उत्तर-दक्षिण : उत्तर और दक्षिण। यह द्वंद्व समास है। दोनों दिशाएँ समान रूप से प्रधान हैं और विग्रह में और जोड़ा जाता है। प्रश्न में किन्हीं दो का विकल्प है; स्पष्टता के लिए तीनों पदों के उत्तर दिए गए हैं।

चरण 4: निष्कर्ष स्वतंत्र देश : स्वतंत्र है जो देश — कर्मधारय; चतुर्भुज : चार भुजाएँ हैं जिसकी — बहुव्रीहि; उत्तर-दक्षिण : उत्तर और दक्षिण — द्वंद्व।

त्वरित सुझाव: चतुर्भुज में केवल चार देखकर द्विगु न लिखें; विष्णु का बोध होने पर अन्यपदार्थ प्रधान है और बहुव्रीहि होगा।

12(ख). किन्हीं दो पद-समूह के समस्त पद बनाइए और समास का नाम भी लिखिए :

बिना खटके के, चार राहों का समूह, क्रीड़ा के लिए क्षेत्र। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समास में परस्पर संबंधित पदों को मिलाकर संक्षिप्त पद बनाया जाता है। समास का भेद उनके आपसी संबंध और प्रधानता से निर्धारित होता है।
- अव्ययीभाव में पहला अव्यय प्रधान, द्विगु में संख्यावाची पूर्वपद और तत्पुरुष में कारक-संबंध का लोप होता है।

चरण 1: अव्यय और संख्या का संबंध पहचानिए 'बिना खटके के' का समस्त पद 'बेखटके' है और यह अव्ययीभाव समास है। यहाँ निश्चिंत होकर या बिना किसी खटके के काम करने का अव्ययात्मक अर्थ है। 'चार राहों का समूह' का समस्त पद 'चौराहा' है। यह द्विगु समास है, क्योंकि पहला पद चार संख्या बताता है और पूरा पद राहों के समूह का बोध कराता है।

चरण 2: प्रयोजन-संबंध पहचानिए 'क्रीड़ा के लिए क्षेत्र' का समस्त पद 'क्रीड़ाक्षेत्र' है। यह चतुर्थी तत्पुरुष समास है, क्योंकि विग्रह में 'के लिए' प्रयुक्त होता है। इसका आशय खेल के लिए निर्धारित मैदान से है। प्रश्न में किन्हीं दो का निर्देश है; अभ्यास की पूर्णता के लिए तीनों पदों के समस्त रूप और समास दिए गए हैं।

चरण 3: निष्कर्ष बेखटके — अव्ययीभाव; चौराहा — द्विगु; क्रीड़ाक्षेत्र — चतुर्थी तत्पुरुष।

त्वरित सुझाव: विग्रह में संख्या तथा 'के लिए' जैसे संबंधसूचक पद पहले पहचानें; इन्हीं से समास का नाम तय करें।

13(क). निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए : पहले तो भ्रष्टाचार को खत्म करा जाना चाहिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- क्रिया का मानक रूप वाक्य के आशय और वाच्य के अनुकूल होना चाहिए।
- कर्मवाच्य में 'किया जाना' जैसा रूप प्रयुक्त होता है; अनावश्यक प्रेरणार्थक प्रयोग से बचना चाहिए।

चरण 1: अशुद्ध क्रिया पहचानिए वाक्य में भ्रष्टाचार समाप्त करने की आवश्यकता व्यक्त की गई है। यहाँ 'खत्म करा जाना' क्रिया-समूह अशुद्ध है। 'करा' प्रेरणार्थक क्रिया का रूप है, जबकि इस वाक्य में किसी अन्य से काम करवाने का अलग आशय नहीं दिया गया है।

चरण 2: मानक रूप रखिए 'खत्म करना' के कर्मवाच्य रूप में 'खत्म किया जाना' आएगा। अतः बाकी वाक्य को यथावत रखते हुए केवल अशुद्ध क्रिया-रूप बदलना पर्याप्त है। इससे कथन का आशय भी सुरक्षित रहता है और वाक्य व्याकरणसम्मत हो जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष शुद्ध वाक्य: पहले तो भ्रष्टाचार को खत्म किया जाना चाहिए।

त्वरित सुझाव: वाक्य शुद्ध करते समय पहले मुख्य क्रिया पहचानें और उसी के अनुसार 'किया जाना' जैसे सहायक रूप जाँचें।

13(ख). निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए : टीम में नहीं लिया तो तुम क्या करेगा ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कर्ता के पुरुष और वचन के अनुसार क्रिया का रूप होना चाहिए।
- 'तुम' मध्यम पुरुष का सर्वनाम है; इसके साथ भविष्यत् काल में 'करोगे' का प्रयोग होता है।

चरण 1: कर्ता की पहचान कीजिए इस प्रश्नवाचक वाक्य का कर्ता 'तुम' है। 'टीम में नहीं लिया' स्थिति बताने वाला अंश है। मुख्य प्रश्न यह है कि उस स्थिति में संबोधित व्यक्ति क्या करेगा। इसलिए मुख्य क्रिया की अन्विति 'तुम' से जाँची जाएगी।

चरण 2: क्रिया को कर्ता के अनुरूप कीजिए 'करेगा' का प्रयोग 'वह' जैसे अन्य पुरुष एकवचन कर्ता के साथ होता है। 'तुम' के साथ इसका मानक रूप 'करोगे' होगा। केवल यही परिवर्तन करने से प्रश्न का मूल भाव और भविष्यत् काल दोनों सुरक्षित रहते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष शुद्ध वाक्य: टीम में नहीं लिया तो तुम क्या करोगे?

त्वरित सुझाव: 'तुम' देखते ही मुख्य क्रिया के मध्यम पुरुष रूप की जाँच करें; 'तुम करोगे' सही अन्विति है।

13(ग). निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए : गाँधी का देश बहुत ऋणी है। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जिस व्यक्ति का उपकार माना जाए, ऋणी होने का संबंध उसी व्यक्ति से जुड़ता है।
- कारक-चिह्न गलत पद के साथ लगने पर अर्थ बदल जाता है; शब्दक्रम से सही संबंध स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: अर्थ-संबंध समझिए अभिप्रेत आशय यह है कि देश गांधीजी के योगदान और उपकारों का ऋणी है। मूल वाक्य में 'गाँधी का' को 'देश' के साथ रखने से 'गाँधी का देश' पद-समूह बन जाता है और ऋणी होने का अपेक्षित संबंध स्पष्ट नहीं होता।

चरण 2: संबंधसूचक पद उचित स्थान पर रखिए 'का' का संबंध 'ऋणी' से जोड़ने के लिए 'गाँधी का' को 'देश' के बाद रखा जाता है। इस प्रकार देश कर्ता बनता है और गांधीजी वह व्यक्ति होते हैं जिनके प्रति कृतज्ञता प्रकट की गई है। वाक्य का भाव बिना अनावश्यक विस्तार के स्पष्ट हो जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष शुद्ध वाक्य: देश गाँधी का बहुत ऋणी है।

त्वरित सुझाव: 'किसका ऋणी?' पूछकर संबंधित पद को 'ऋणी' के पास रखें; इससे अर्थ का भ्रम दूर होगा।

14(क). निर्देशानुसार उत्तर दीजिए : हमारी-तुम्हारी तरह इनमें जड़ें नहीं होतीं ? (प्रश्नार्थक में बदलिए) [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्नार्थक वाक्य किसी तथ्य के विषय में उत्तर की अपेक्षा करता है।
- हाँ या नहीं में उत्तर देने वाले प्रश्न में प्रायः वाक्य के आरंभ में 'क्या' रखा जाता है।

चरण 1: मूल आशय सुरक्षित रखिए मूल कथन में हमारी-तुम्हारी तरह जड़ें होने की बात का निषेध है। प्रश्नार्थक रूप बनाते समय 'इनमें', तुलना का पद और 'नहीं होतीं' यथावत रखने चाहिए, ताकि अर्थ और निषेध न बदलें।

चरण 2: प्रश्नसूचक पद लगाइए वाक्य के आरंभ में 'क्या' लगाने से हाँ या नहीं में उत्तर की अपेक्षा स्पष्ट हो जाती है। प्रश्न में पहले से प्रश्नचिह्न है, फिर भी निर्देशानुसार प्रश्नार्थक संरचना को शब्दों द्वारा स्पष्ट करना उचित है। अंत में प्रश्नचिह्न रखा जाएगा।

चरण 3: निष्कर्ष क्या हमारी-तुम्हारी तरह इनमें जड़ें नहीं होतीं?

त्वरित सुझाव: हाँ या नहीं वाले प्रश्न में आरंभिक 'क्या' जोड़ें और मूल वाक्य का निषेध तथा आशय सुरक्षित रखें।

14(ख). निर्देशानुसार उत्तर दीजिए : यदि जड़ न हो तो वे जी नहीं सकते। (अर्थ के अनुसार वाक्यभेद बताइए) [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संकेतवाचक वाक्य में किसी कार्य या स्थिति का होना दूसरी शर्त पर निर्भर रहता है।
- 'यदि ... तो ...' की रचना सामान्यतः शर्त और उसके परिणाम का संबंध प्रकट करती है।

चरण 1: शर्त और परिणाम अलग कीजिए 'यदि जड़ न हो' वाक्य का शर्त बताने वाला अंश है। 'तो वे जी नहीं सकते' उस शर्त का परिणाम बताता है। अर्थात् जीवित रहने की स्थिति को जड़ के होने से जोड़ा गया है।

चरण 2: अर्थ के आधार पर भेद बताइए यहाँ केवल निषेध या नकारात्मक सूचना नहीं है; पूरी अभिव्यक्ति में एक स्थिति दूसरी स्थिति पर निर्भर है। इसलिए अर्थ की दृष्टि से इसे संकेतवाचक अथवा शर्तवाचक वाक्य कहते हैं। 'नहीं' होने पर भी निर्णायक विशेषता इसकी शर्त है।

चरण 3: निष्कर्ष यह संकेतवाचक अर्थात् शर्तवाचक वाक्य है।

त्वरित सुझाव: अर्थ के अनुसार भेद पूछे जाने पर 'यदि ... तो ...' में व्यक्त शर्त को पहचानें; केवल 'नहीं' पर निर्णय न लें।

14(ग). निर्देशानुसार उत्तर दीजिए : जब तक मैं हूँ, तब तक कोई न डरे। (सरल वाक्य में बदलिए) [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सरल वाक्य में एक मुख्य उपवाक्य और एक समापिका क्रिया होती है।

- कालवाचक आश्रित उपवाक्य को पदबंध में बदलकर मूल आशय सुरक्षित रखते हुए सरल वाक्य बनता है।

चरण 1: दो उपवाक्यों की पहचान कीजिए 'जब तक मैं हूँ' काल की सीमा बताने वाला आश्रित उपवाक्य है। 'तब तक कोई न डरे' मुख्य उपवाक्य है। दोनों 'जब तक ... तब तक ...' से जुड़े हैं; इस रूप में वाक्य में दो समापिका क्रियाएँ हैं।

चरण 2: आश्रित उपवाक्य को पदबंध बनाइए 'जब तक मैं हूँ' का समानार्थक पदबंध 'मेरे रहते' है। इसे मुख्य कथन से जोड़ने पर अलग आश्रित उपवाक्य हट जाता है। अब 'न डरे' एकमात्र समापिका क्रिया है और वक्ता की उपस्थिति में न डरने का मूल भाव बना रहता है।

चरण 3: निष्कर्ष सरल वाक्य: मेरे रहते कोई न डरे।

त्वरित सुझाव: सरल वाक्य बनाते समय 'जब तक मैं हूँ' जैसे अंश को 'मेरे रहते' पदबंध में बदलकर समापिका क्रियाएँ गिनें।

14(घ). निर्देशानुसार उत्तर दीजिए : मैं देखता रहा कि वह पेड़ झुक रहा है। (रचना के अनुसार वाक्यभेद बताइए) [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मिश्र वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य और कम-से-कम एक आश्रित उपवाक्य होता है।
- संज्ञा उपवाक्य मुख्य क्रिया के कर्म के रूप में आता है और प्रायः 'कि' से जुड़ता है।

चरण 1: प्रधान और आश्रित अंश पहचानिए 'मैं देखता रहा' प्रधान उपवाक्य है। 'कि वह पेड़ झुक रहा है' यह बताता है कि वक्ता क्या देखता रहा। दूसरा अंश मुख्य क्रिया के कर्म का कार्य कर रहा है और उससे आश्रित संबंध रखता है।

चरण 2: रचना के आधार पर वर्गीकरण कीजिए यहाँ 'कि' से जुड़ा संज्ञा उपवाक्य है। दोनों अंश समान स्तर पर स्वतंत्र कथनों की तरह नहीं जुड़े हैं। एक मुख्य और दूसरा उस पर आश्रित होने के कारण वाक्य रचना की दृष्टि से मिश्र वाक्य है।

चरण 3: निष्कर्ष यह मिश्र वाक्य है; 'कि वह पेड़ झुक रहा है' आश्रित संज्ञा उपवाक्य है।

त्वरित सुझाव: 'क्या देखता रहा?' पूछें; 'कि' वाला अंश उत्तर बने तो वह कर्मरूप संज्ञा उपवाक्य है।

15(i). निम्नलिखित लोकोक्तियों और मुहावरों का वाक्य-प्रयोग इस प्रकार कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए : उलटा चोर कोतवाल को डाँटे [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लोकोक्ति का वाक्य-प्रयोग ऐसी स्थिति में होना चाहिए जिससे उसका भाव स्वयं स्पष्ट हो जाए।
- 'उलटा चोर कोतवाल को डाँटे' का अर्थ है दोषी का स्वयं को बचाने के लिए जाँचने या टोकने वाले को डाँटना।

चरण 1: उचित प्रसंग चुनिए ऐसा प्रसंग चुनना है जिसमें गलती करने वाला व्यक्ति अपनी गलती मानने के बजाय उसे पकड़ने वाले पर आरोप लगाए। केवल किसी के डाँटने की बात पर्याप्त नहीं; दोषी का उलटे निर्दोष या अधिकारी को डाँटना स्पष्ट होना चाहिए।

चरण 2: भाव स्पष्ट करने वाला वाक्य लिखिए रमेश ने कार्यालय के पैसे चुराए और पूछताछ होने पर लेखाकार को ही बेईमान कहने लगा; यह तो वही बात हुई, उलटा चोर कोतवाल को डाँटे। यहाँ चोरी रमेश का दोष है और लेखाकार पर उसका आरोप लोकोक्ति का भाव स्पष्ट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष वाक्य-प्रयोग: पैसे चुराने वाला रमेश पूछताछ पर लेखाकार को ही बेईमान कहने लगा—उलटा चोर कोतवाल को डाँटे।

त्वरित सुझाव: प्रयोग में पहले दोषी की गलती और फिर उसी का उलटा आरोप दिखाएँ, तभी लोकोक्ति का अर्थ स्पष्ट होगा।

15(ii). निम्नलिखित लोकोक्तियों और मुहावरों का वाक्य-प्रयोग इस प्रकार कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए : साँच को आँच क्या [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लोकोक्ति को ऐसे प्रसंग में रखना चाहिए जिससे उसका निहित अर्थ सहज रूप से समझ में आए।
- 'साँच को आँच क्या' का भाव है कि सत्यवादी या निर्दोष व्यक्ति को जाँच अथवा आरोप से डरने की आवश्यकता नहीं।

चरण 1: सत्य और निर्भयता का संबंध समझिए इस लोकोक्ति में 'साँच' का अर्थ सत्य और 'आँच' का आशय हानि या संकट है। प्रयोग में ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जो अपना कार्य सत्यनिष्ठा से करने के कारण आरोप या जाँच से विचलित न हो।

चरण 2: पूरा प्रसंग लिखिए सीमा ने हिसाब ईमानदारी से रखा था, इसलिए जाँच की सूचना पर वह निश्चिंत होकर बोली, साँच को आँच क्या। यहाँ ईमानदार हिसाब उसका निर्दोष होना बताता है और जाँच के समय निश्चिंत रहना लोकोक्ति का अर्थ स्पष्ट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष वाक्य-प्रयोग: मैंने सारा हिसाब ईमानदारी से रखा है, इसलिए जाँच से मुझे क्या डर—साँच को आँच क्या।

त्वरित सुझाव: सत्य बोलने या ईमानदार काम का प्रसंग देकर निर्भयता दिखाएँ; केवल लोकोक्ति जोड़ देना पर्याप्त नहीं।

15(iii). निम्नलिखित लोकोक्तियों और मुहावरों का वाक्य-प्रयोग इस प्रकार कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए : पापड़ बेलना [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मुहावरे का अर्थ शब्दों के सीधे अर्थ से भिन्न होता है।
- वाक्य का प्रसंग मुहावरे के लाक्षणिक अर्थ को स्पष्ट करता है।

चरण 1: अर्थ पहचानिए 'पापड़ बेलना' का अर्थ है किसी काम को पूरा करने के लिए बहुत परिश्रम करना अथवा अनेक कठिनाइयाँ झेलना। यहाँ इसका आशय खाने के पापड़ बनाने से नहीं है।

चरण 2: अर्थपूर्ण वाक्य बनाइए नौकरी पाने के लिए रमेश को कई वर्ष तक पापड़ बेलने पड़े; उसने अनेक परीक्षाएँ दीं और बार-बार साक्षात्कारों के लिए दूर-दूर गया। इस प्रसंग में लगातार प्रयास और कठिनाइयाँ झेलने का भाव स्पष्ट होता है।

चरण 3: निष्कर्ष वाक्य-प्रयोग: नौकरी पाने के लिए रमेश को कई वर्ष तक पापड़ बेलने पड़े।

त्वरित सुझाव: इस मुहावरे के साथ कठिन उद्देश्य और उसे पाने का लंबा संघर्ष दिखाइए।

15(iv). निम्नलिखित लोकोक्तियों और मुहावरों का वाक्य-प्रयोग इस प्रकार कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए : खरी-खोटी सुनाना [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मुहावरे का प्रयोग लाक्षणिक अर्थ में किया जाता है।
- प्रसंग से क्रिया और उसके भाव की पहचान स्पष्ट होनी चाहिए।

चरण 1: अर्थ समझिए 'खरी-खोटी सुनाना' का अर्थ किसी को भला-बुरा कहना अथवा कड़ी डाँट लगाना है। इसका प्रयोग असंतोष और नाराज़गी की स्थिति में होता है।

चरण 2: प्रसंग में प्रयोग कीजिए बार-बार समझाने के बाद भी जब मोहन ने छोटे बच्चों को सताना नहीं छोड़ा, तो उसके पिता ने उसे

खूब खरी-खोटी सुनाई। यहाँ पिता के नाराज़ होकर कड़े शब्दों में डाँटने का भाव है, इसलिए मुहावरे का अर्थ स्पष्ट हो जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष वाक्य-प्रयोग: बच्चों को सताने पर पिता ने मोहन को खूब खरी-खोटी सुनाई।

त्वरित सुझाव: किसी गलती और उस पर मिली कड़ी डाँट का प्रसंग रखकर वाक्य बनाइए।

16(क). वाक्य-विश्लेषण कीजिए : कलाकार चित्र बना रहा था। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उद्देश्य वह अंश है जिसके विषय में कुछ कहा जाता है।
- विधेय उद्देश्य के विषय में कही गई बात है; उसमें कर्म तथा क्रिया शामिल हो सकते हैं।

चरण 1: उद्देश्य अलग कीजिए वाक्य 'कलाकार चित्र बना रहा था।' में चित्र बनाने का काम कलाकार कर रहा है। अत: वाक्य का कर्ता और उद्देश्य 'कलाकार' है। इसके साथ कोई विशेषण अथवा अन्य विस्तार नहीं दिया गया है, इसलिए उद्देश्य का विस्तार नहीं है।

चरण 2: विधेय और उसके घटक बताइए कलाकार के विषय में कहा गया है कि वह चित्र बना रहा था। अत: पूरा विधेय 'चित्र बना रहा था' है। इसमें 'चित्र' कर्म है तथा 'बना रहा था' क्रिया-पद है। क्रिया सकर्मक है, क्योंकि 'क्या बना रहा था?' पूछने पर 'चित्र' उत्तर मिलता है। 'रहा था' से भूतकाल में क्रिया के जारी रहने का बोध होता है।

चरण 3: वाक्य की रचना पहचानिए इसमें एक ही उद्देश्य और एक ही विधेय है। कोई आश्रित उपवाक्य या दूसरा स्वतंत्र उपवाक्य नहीं है। इसलिए रचना की दृष्टि से यह सरल वाक्य है। केवल 'चित्र' को विधेय कहना अधूरा होगा, क्योंकि विधेय में क्रिया भी आती है।

चरण 4: निष्कर्ष उद्देश्य: कलाकार। विधेय: चित्र बना रहा था। कर्म: चित्र। क्रिया: बना रहा था। यह सरल वाक्य है।

त्वरित सुझाव: पहले 'कौन?' से कर्ता खोजिए, फिर उसके बारे में कही गई पूरी बात को विधेय मानिए।

16(ख). एक संयुक्त वाक्य में संश्लेषण कीजिए : (i) एक दिन की बात है। (ii) कुछ लड़के नहाने के लिए आए। (iii) वे मछलियों के समान तैरने लगे। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संयुक्त वाक्य में स्वतंत्र उपवाक्य समुच्चयबोधक शब्दों से जोड़े जाते हैं।
- संश्लेषण में मूल वाक्यों का आशय और घटनाओं का क्रम सुरक्षित रहता है।

चरण 1: मूल सूचनाएँ पहचानिए तीनों वाक्यों में एक दिन का उल्लेख, लड़कों का नहाने के लिए आना और उनका मछलियों के समान तैरना बताया गया है। 'वे' का संबंध उन्हीं लड़कों से है। संश्लेषण करते समय इन तीनों सूचनाओं और उनके काल को बनाए रखना चाहिए।

चरण 2: स्वतंत्र उपवाक्यों को जोड़िए प्रथम सूचना को 'एक दिन की बात है' के रूप में रखें। इसके बाद आने की घटना को 'और' तथा तैरने की घटना को 'तथा' से जोड़ दें। 'कुछ लड़के नहाने के लिए आए' और 'वे मछलियों के समान तैरने लगे' स्वतंत्र रूप से अर्थ देते हैं। इन्हें समान स्तर पर जोड़ने से संयुक्त रचना बनती है।

चरण 3: संयुक्त वाक्य लिखिए एक दिन की बात है और कुछ लड़के नहाने के लिए आए तथा वे मछलियों के समान तैरने लगे। इसमें स्वतंत्र उपवाक्य 'और' तथा 'तथा' से जुड़े हैं। 'जो' या 'जब' जैसे आश्रित उपवाक्य बनाने वाले शब्द जोड़ने की आवश्यकता नहीं है।

चरण 4: निष्कर्ष एक दिन की बात है और कुछ लड़के नहाने के लिए आए तथा वे मछलियों के समान तैरने लगे।

त्वरित सुझाव: संयुक्त वाक्य बनाते समय स्वतंत्र कथनों को 'और', 'तथा' जैसे समुच्चयबोधकों से जोड़िए।

17(क). निम्नलिखित अवतरण को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

सामाजिक जीवन में क्रोध की बराबर ज़रूरत पड़ती है। यदि क्रोध न हो तो मनुष्य दूसरों के द्वारा पहुँचाए जाने वाले बहुत से कष्टों से छूटने का उपाय ही न कर सके। कोई मनुष्य किसी दुष्ट की दो-चार चोटें नित्य सहता है। यदि उसमें क्रोध का भाव विकसित न हुआ तो वह केवल 'आह', 'ऊह' करेगा, जिसका उस दुष्ट पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। उस दुष्ट के हृदय में विवेक, दया आदि उत्पन्न करने में बहुत समय लगेगा। इतने छोटे-छोटे कामों के लिए इतना समय किसी को नहीं दिया जा सकता। भयभीत प्राणी कभी-कभी अपनी रक्षा कर लेता है, पर इस प्रकार प्राप्त निवृत्ति स्थायी नहीं होती। हमारे कहने का अभिप्राय यह नहीं है कि क्रोध करने वाले के मन में सदा भावी कष्ट से बचने का उद्देश्य रहा करता है। कहने का अभिप्राय केवल इतना है कि चेतन सृष्टि के भीतर क्रोध का विधान इसीलिए है।

सृष्टि में क्रोध का विधान किसलिए किया गया है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर गद्यांश के कथन पर आधारित होना चाहिए।
- क्रोध के प्राकृतिक प्रयोजन और हर व्यक्ति के सचेत उद्देश्य में अंतर है।

चरण 1: प्रयोजन का संकेत पहचानिए लेखक बताता है कि क्रोध न हो तो मनुष्य दूसरों के द्वारा पहुँचाए जाने वाले अनेक कष्टों से छुटकारा पाने का उपाय नहीं कर सकेगा। इससे क्रोध का आत्मरक्षा संबंधी प्रयोजन स्पष्ट होता है।

चरण 2: उत्तर का आशय स्पष्ट कीजिए सृष्टि में क्रोध का विधान इसलिए है कि प्राणी दूसरों के अत्याचार का प्रतिरोध कर सके और अपने को कष्ट से बचा सके। लेखक यह नहीं कहता कि क्रोध करते समय हर व्यक्ति के मन में सदा भविष्य की रक्षा का विचार मौजूद रहता है।

चरण 3: निष्कर्ष सृष्टि में क्रोध का विधान प्राणियों को दूसरों के अत्याचार और कष्टों से अपनी रक्षा करने तथा उनका प्रतिरोध करने में समर्थ बनाने के लिए है।

त्वरित सुझाव: प्रयोजन पूछे जाने पर अंतिम कथन को पहले दिए गए आत्मरक्षा के उदाहरण से जोड़िए।

17(ख). निम्नलिखित अवतरण को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

सामाजिक जीवन में क्रोध की बराबर ज़रूरत पड़ती है। यदि क्रोध न हो तो मनुष्य दूसरों के द्वारा पहुँचाए जाने वाले बहुत से कष्टों से छूटने का उपाय ही न कर सके। कोई मनुष्य किसी दुष्ट की दो-चार चोटें नित्य सहता है। यदि उसमें क्रोध का भाव विकसित न हुआ तो वह केवल 'आह', 'ऊह' करेगा, जिसका उस दुष्ट पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। उस दुष्ट के हृदय में विवेक, दया आदि उत्पन्न करने में बहुत समय लगेगा। इतने छोटे-छोटे कामों के लिए इतना समय किसी को नहीं दिया जा सकता। भयभीत प्राणी कभी-कभी अपनी रक्षा कर लेता है, पर इस प्रकार प्राप्त निवृत्ति स्थायी नहीं होती। हमारे कहने का अभिप्राय यह नहीं है कि क्रोध करने वाले के मन में सदा भावी कष्ट से बचने का उद्देश्य रहा करता है। कहने का अभिप्राय केवल इतना है कि चेतन सृष्टि के भीतर क्रोध का विधान इसीलिए है।

सामाजिक जीवन में क्रोध की आवश्यकता क्यों होती है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कारण संबंधी उत्तर में कथन के साथ उसका आधार देना चाहिए।
- गद्यांश क्रोध की आवश्यकता को कष्टों के प्रतिरोध से जोड़ता है।

चरण 1: समस्या पहचानिए गद्यांश में दुष्ट व्यक्ति की चोटें सहने वाले मनुष्य का उदाहरण है। केवल 'आह', 'ऊह' करने से उस दुष्ट पर प्रभाव नहीं पड़ता और उसका अत्याचार नहीं रुकता।

चरण 2: आवश्यकता स्पष्ट कीजिए सामाजिक जीवन में क्रोध मनुष्य को अन्याय का प्रतिरोध करने और दूसरों के दिए कष्टों से छुटकारा पाने में सहायता करता है। दुष्ट के हृदय में विवेक और दया जगाने की प्रतीक्षा लंबी हो सकती है; इसलिए तत्काल अपनी रक्षा करना आवश्यक होता है।

चरण 3: निष्कर्ष सामाजिक जीवन में दूसरों के अत्याचार का प्रतिरोध करने और उनके पहुँचाए कष्टों से बचने के लिए क्रोध की आवश्यकता होती है।

त्वरित सुझाव: कारण बताते समय चोटें सहने वाले व्यक्ति के उदाहरण से प्रतिरोध की आवश्यकता स्पष्ट कीजिए।

17(ग). निम्नलिखित अवतरण को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

सामाजिक जीवन में क्रोध की बराबर ज़रूरत पड़ती है। यदि क्रोध न हो तो मनुष्य दूसरों के द्वारा पहुँचाए जाने वाले बहुत से कष्टों से छूटने का उपाय ही न कर सके। कोई मनुष्य किसी दुष्ट की दो-चार चोटें नित्य सहता है। यदि उसमें क्रोध का भाव विकसित न हुआ तो वह केवल 'आह', 'ऊह' करेगा, जिसका उस दुष्ट पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। उस दुष्ट के हृदय में विवेक, दया आदि उत्पन्न करने में बहुत समय लगेगा। इतने छोटे-छोटे कामों के लिए इतना समय किसी को नहीं दिया जा सकता। भयभीत प्राणी कभी-कभी अपनी रक्षा कर लेता है, पर इस प्रकार प्राप्त निवृत्ति स्थायी नहीं होती। हमारे कहने का अभिप्राय यह नहीं है कि क्रोध करने वाले के मन में सदा भावी कष्ट से बचने का उद्देश्य रहा करता है। कहने का अभिप्राय केवल इतना है कि चेतन सृष्टि के भीतर क्रोध का विधान इसीलिए है।

दुष्ट के मन में किन गुणों का अभाव होता है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सीधे पूछे गए तथ्य का उत्तर गद्यांश के शब्दों से चुनना चाहिए।
- लेखक जिन गुणों को उत्पन्न करने की बात करता है, उनका अभाव संकेतित है।

चरण 1: निर्णायक कथन देखिए लेखक कहता है कि उस दुष्ट के हृदय में 'विवेक, दया आदि' उत्पन्न करने में बहुत समय लगेगा। यह कथन बताता है कि दुष्ट में इन मानवीय गुणों की कमी है।

चरण 2: दोनों गुणों का आशय समझिए विवेक सही और गलत में अंतर करने की क्षमता है तथा दया दूसरों के दुख को समझकर उन पर करुणा करने का भाव है। इनका अभाव होने के कारण दुष्ट दूसरे की पीड़ा से प्रभावित नहीं होता। उत्तर में गद्यांश के यही दो स्पष्ट गुण लिखने चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष दुष्ट के मन में विवेक और दया जैसे मानवीय गुणों का अभाव होता है।

त्वरित सुझाव: गुण पूछे जाने पर 'विवेक, दया आदि' वाले कथन के मुख्य शब्द सीधे चुनिए।

17(घ). निम्नलिखित अवतरण को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

सामाजिक जीवन में क्रोध की बराबर ज़रूरत पड़ती है। यदि क्रोध न हो तो मनुष्य दूसरों के द्वारा पहुँचाए जाने वाले बहुत से कष्टों से छूटने का उपाय ही न कर सके। कोई मनुष्य किसी दुष्ट की दो-चार चोटें नित्य सहता है। यदि उसमें क्रोध का भाव विकसित न हुआ तो वह केवल 'आह', 'ऊह' करेगा, जिसका उस दुष्ट पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। उस दुष्ट के हृदय में विवेक, दया आदि उत्पन्न करने में बहुत समय लगेगा। इतने छोटे-छोटे कामों के लिए इतना समय किसी को नहीं दिया जा सकता। भयभीत प्राणी कभी-कभी अपनी रक्षा कर लेता है, पर इस प्रकार प्राप्त निवृत्ति स्थायी नहीं होती। हमारे कहने का अभिप्राय यह नहीं है कि क्रोध करने वाले के मन में सदा भावी कष्ट से बचने का उद्देश्य रहा करता है। कहने का अभिप्राय केवल इतना है कि चेतन सृष्टि के भीतर क्रोध का विधान इसीलिए है।

कैसी निवृत्ति स्थायी नहीं होती और क्यों ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निवृत्ति का अर्थ यहाँ कष्ट से छुटकारा है।
- उत्तर में अस्थायी छुटकारे की स्थिति और उसका कारण दोनों आवश्यक हैं।

चरण 1: निवृत्ति का प्रकार पहचानिए गद्यांश के अनुसार भयभीत प्राणी कभी-कभी अपनी रक्षा कर लेता है, लेकिन इस प्रकार मिलने वाला कष्ट से छुटकारा स्थायी नहीं होता। यहाँ लेखक भय के सहारे प्राप्त राहत की बात कर रहा है।

चरण 2: अस्थायित्व का कारण बताइए भय के कारण मिली रक्षा में दुष्ट के अत्याचार का प्रभावी प्रतिरोध नहीं होता। उसकी कष्ट पहुँचाने की प्रवृत्ति समाप्त नहीं होती, इसलिए वह दोबारा कष्ट दे सकता है। इसीलिए केवल भयभीत होकर किसी अवसर पर बच जाना स्थायी निवृत्ति नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष भयभीत होकर किसी प्रकार अपनी रक्षा कर लेने से मिली निवृत्ति स्थायी नहीं होती, क्योंकि उससे अत्याचार का प्रभावी प्रतिरोध नहीं होता और फिर कष्ट मिलने की संभावना बनी रहती है।

त्वरित सुझाव: 'कैसी' के उत्तर में भय से मिली राहत और 'क्यों' के उत्तर में फिर कष्ट आने का कारण लिखिए।

17(ङ). निम्नलिखित अवतरण को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

सामाजिक जीवन में क्रोध की बराबर ज़रूरत पड़ती है। यदि क्रोध न हो तो मनुष्य दूसरों के द्वारा पहुँचाए जाने वाले बहुत से कष्टों से छूटने का उपाय ही न कर सके। कोई मनुष्य किसी दुष्ट की दो-चार चोटें नित्य सहता है। यदि उसमें क्रोध का भाव विकसित न हुआ तो वह केवल 'आह', 'ऊह' करेगा, जिसका उस दुष्ट पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। उस दुष्ट के हृदय में विवेक, दया आदि उत्पन्न करने में बहुत समय लगेगा। इतने छोटे-छोटे कामों के लिए इतना समय किसी को नहीं दिया जा सकता। भयभीत प्राणी कभी-कभी अपनी रक्षा कर लेता है, पर इस प्रकार प्राप्त निवृत्ति स्थायी नहीं होती। हमारे कहने का अभिप्राय यह नहीं है कि क्रोध करने वाले के मन में सदा भावी कष्ट से बचने का उद्देश्य रहा करता है। कहने का अभिप्राय केवल इतना है कि चेतन सृष्टि के भीतर क्रोध का विधान इसीलिए है।

उपर्युक्त अवतरण के लिए एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शीर्षक संक्षिप्त तथा पूरे गद्यांश की केंद्रीय बात का प्रतिनिधि होता है।
- किसी एक उदाहरण के स्थान पर मुख्य विचार को शीर्षक बनाना चाहिए।

चरण 1: केंद्रीय विषय पहचानिए गद्यांश में सामाजिक जीवन में क्रोध की आवश्यकता समझाई गई है। दुष्ट की चोटें और भयभीत प्राणी की रक्षा के उदाहरण इसी विचार के समर्थन में दिए गए हैं।

चरण 2: उपयुक्त शीर्षक चुनिए 'सामाजिक जीवन में क्रोध की आवश्यकता' शीर्षक विषय और लेखक का मुख्य प्रतिपाद्य दोनों स्पष्ट करता है। केवल 'दुष्ट व्यक्ति' शीर्षक रखने से बात एक उदाहरण तक सीमित हो जाएगी, जबकि पूरा अवतरण क्रोध की उपयोगिता बताता है।

चरण 3: निष्कर्ष उपयुक्त शीर्षक: सामाजिक जीवन में क्रोध की आवश्यकता।

त्वरित सुझाव: शीर्षक में पूरे अनुच्छेद का मुख्य विषय रखिए; किसी एक उदाहरण को शीर्षक न बनाइए।

18(क). निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

जो बीत गई सो बात गई।
जीवन में एक सितारा था,
माना, वह बेहद प्यारा था,
वह डूब गया, तो डूब गया,
अंबर के आनन को देखो
कितने इसके तारे टूटे
कितने इसके प्यारे छूटे
जो छूट गए फिर कहाँ मिले,
पर बोलो - टूटे तारों पर
कब अंबर शोक मनाता है !
जो बीत गई सो बात गई !
जीवन में वह था एक कुसुम
थे जिस पर नित्य निछावर तुम
वह सूख गया तो सूख गया
मधुबन की छाती को देखो
सूखी इसकी कितनी कलियाँ
मुरझाई कितनी वल्लरियाँ
पर बोलो सूखे सुमनों पर
कब मधुबन शोर मचाता है,
जो बीत गई, सो बात गई।

"टूटे तारों पर आकाश का शोर न मचाना" क्या सिद्ध करता है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रकृति के व्यवहार से मनुष्य के लिए जीवन-संदेश ग्रहण करना इस प्रश्न का आधार है।
- टूटे तारों और शोक न मनाते अंबर का चित्र धैर्य तथा आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।

चरण 1: प्रकृति का उदाहरण समझिए कवि कहता है कि आकाश के अनेक प्यारे तारे टूटकर उससे बिछुड़ जाते हैं। फिर भी आकाश उनके वियोग में निरंतर शोक नहीं मनाता। यह स्वाभाविक हानि को स्वीकार करने का उदाहरण है।

चरण 2: जीवन से संबंध जोड़िए इसी प्रकार मनुष्य को भी प्रिय वस्तु या व्यक्ति के छूट जाने पर शोक में डूबकर अपना जीवन रोक नहीं देना चाहिए। आकाश का व्यवहार विपत्ति में धैर्य रखने और बीते दुःख से उबरने की सीख देता है।

चरण 3: निष्कर्ष टूटे तारों पर आकाश का शोक न मनाना सिद्ध करता है कि हानि और बिछोह के बाद भी धैर्य रखकर जीवन में आगे बढ़ना चाहिए।

त्वरित सुझाव: आकाश के व्यवहार का वर्णन करने के बाद उससे मिलने वाली धैर्य की सीख अवश्य लिखिए।

18(ख). निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

जो बीत गई सो बात गई।
जीवन में एक सितारा था,
माना, वह बेहद प्यारा था,
वह डूब गया, तो डूब गया,
अंबर के आनन को देखो
कितने इसके तारे टूटे
कितने इसके प्यारे छूटे
जो छूट गए फिर कहाँ मिले,
पर बोलो - टूटे तारों पर
कब अंबर शोक मनाता है !
जो बीत गई सो बात गई !
जीवन में वह था एक कुसुम
थे जिस पर नित्य निछावर तुम
वह सूख गया तो सूख गया
मधुबन की छाती को देखो
सूखी इसकी कितनी कलियाँ
मुरझाई कितनी वल्लरियाँ
पर बोलो सूखे सुमनों पर
कब मधुबन शोर मचाता है,
जो बीत गई, सो बात गई।

मधुबन किसका शोक नहीं मनाता और क्यों ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर में मधुबन के शोक का विषय और शोक न मनाने का कारण, दोनों बताने हैं।
- सूखे सुमन और मुरझाई वल्लरियाँ जीवन में होने वाली हानि के प्राकृतिक उदाहरण हैं।

चरण 1: शोक का विषय पहचानिए मधुबन अपनी सूख चुकी कलियों और मुरझाई हुई वल्लरियों के लिए शोक नहीं मनाता। कविता में सूखे सुमनों पर मधुबन के शोर न मचाने की बात इसी संदर्भ में कही गई है।

चरण 2: कारण स्पष्ट कीजिए फूलों का खिलना और मुरझाना प्रकृति का क्रम है। जो सूख चुका है, केवल उसके लिए विलाप करने से वह वापस नहीं आ सकता। मधुबन इस परिवर्तन को स्वीकार करता है और उसका जीवन आगे चलता रहता है।

चरण 3: निष्कर्ष मधुबन सूखी कलियों, सूखे फूलों और मुरझाई वल्लरियों का शोक नहीं मनाता, क्योंकि मुरझाना प्रकृति का नियम है और बीते को विलाप से वापस नहीं लाया जा सकता।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले सूखे फूलों का उल्लेख कीजिए और फिर प्राकृतिक परिवर्तन को स्वीकार करने का कारण लिखिए।

18(ग). निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

जो बीत गई सो बात गई।
जीवन में एक सितारा था,
माना, वह बेहद प्यारा था,
वह डूब गया, तो डूब गया,
अंबर के आनन को देखो
कितने इसके तारे टूटे
कितने इसके प्यारे छूटे
जो छूट गए फिर कहाँ मिले,
पर बोलो - टूटे तारों पर
कब अंबर शोक मनाता है !
जो बीत गई सो बात गई !
जीवन में वह था एक कुसुम
थे जिस पर नित्य निछावर तुम
वह सूख गया तो सूख गया
मधुबन की छाती को देखो
सूखी इसकी कितनी कलियाँ
मुरझाई कितनी वल्लरियाँ
पर बोलो सूखे सुमनों पर
कब मधुबन शोर मचाता है,
जो बीत गई, सो बात गई।
कविता का केंद्रीय भाव स्पष्ट कीजिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- केंद्रीय भाव कविता के विभिन्न उदाहरणों को जोड़ने वाला मुख्य जीवन-संदेश होता है।
- यहाँ बार-बार आने वाली पंक्ति बीते दुःख को स्वीकार कर आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है।

चरण 1: दोनों उदाहरणों का साम्य देखिए आकाश अपने टूटे तारों पर शोक नहीं करता और मधुबन सूखे फूलों पर शोर नहीं मचाता। दोनों उदाहरण बताते हैं कि प्रिय वस्तुओं का नष्ट होना और उनसे बिछुड़ना जीवन के परिवर्तनशील क्रम का अंग है।

चरण 2: मुख्य संदेश स्पष्ट कीजिए मनुष्य को भी बीते हुए सुख और खोए हुए प्रियजनों की स्मृति में इतना नहीं डूबना चाहिए कि उसका वर्तमान रुक जाए। हानि को धैर्य से स्वीकार करके जीवन के शेष अवसरों की ओर बढ़ना ही कविता की प्रेरणा है।

चरण 3: निष्कर्ष कविता का केंद्रीय भाव है कि बीती हुई हानि और बिछोह का अंतहीन शोक छोड़कर मनुष्य धैर्य तथा आशा के साथ वर्तमान जीवन में आगे बढ़े।

त्वरित सुझाव: केंद्रीय भाव लिखते समय तारे और फूलों के उदाहरणों को एक ही जीवन-संदेश से जोड़िए।

18(घ). निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

जो बीत गई सो बात गई।
जीवन में एक सितारा था,
माना, वह बेहद प्यारा था,
वह डूब गया, तो डूब गया,
अंबर के आनन को देखो
कितने इसके तारे टूटे
कितने इसके प्यारे छूटे
जो छूट गए फिर कहाँ मिले,
पर बोलो - टूटे तारों पर
कब अंबर शोक मनाता है !
जो बीत गई सो बात गई !
जीवन में वह था एक कुसुम
थे जिस पर नित्य निछावर तुम
वह सूख गया तो सूख गया
मधुबन की छाती को देखो
सूखी इसकी कितनी कलियाँ
मुरझाई कितनी वल्लरियाँ
पर बोलो सूखे सुमनों पर
कब मधुबन शोर मचाता है,
जो बीत गई, सो बात गई।

'तारा' और 'कुसुम' किसके प्रतीक हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य में प्रतीक किसी दृश्य वस्तु के माध्यम से व्यापक मानवीय भाव या अनुभव को व्यक्त करता है।
- तारा और कुसुम दोनों के साथ प्रियता तथा उनके खो जाने का भाव जुड़ा हुआ है।

चरण 1: तारे का संकेत समझिए कवि जीवन में एक बेहद प्यारे सितारे के होने और फिर उसके डूब जाने की बात कहता है। इसलिए तारा केवल आकाशीय पिंड नहीं, जीवन के किसी प्रिय व्यक्ति या अत्यंत मूल्यवान संबंध की ओर संकेत करता है।

चरण 2: कुसुम का संकेत समझिए कुसुम पर मनुष्य नित्य निछावर होता था और उसके सूखने पर दुखी होता है। इस कारण कुसुम भी जीवन के प्रिय व्यक्ति, प्रिय वस्तु अथवा सुखद अनुभव का प्रतीक है, जिसके खो जाने से दुःख मिलता है।

चरण 3: निष्कर्ष तारा और कुसुम जीवन के अत्यंत प्रिय व्यक्तियों, वस्तुओं तथा सुखद संबंधों के प्रतीक हैं। उनका डूबना या सूखना उन प्रिय आधारों के छूट जाने को व्यक्त करता है।

त्वरित सुझाव: प्रतीक का अर्थ बताते समय प्रियता और बिछोह, दोनों को कविता की पंक्तियों से जोड़िए।

18(ङ). निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

जो बीत गई सो बात गई।
जीवन में एक सितारा था,
माना, वह बेहद प्यारा था,
वह डूब गया, तो डूब गया,
अंबर के आनन को देखो
कितने इसके तारे टूटे
कितने इसके प्यारे छूटे
जो छूट गए फिर कहाँ मिले,
पर बोलो - टूटे तारों पर
कब अंबर शोक मनाता है !
जो बीत गई सो बात गई !
जीवन में वह था एक कुसुम
थे जिस पर नित्य निछावर तुम
वह सूख गया तो सूख गया
मधुबन की छाती को देखो
सूखी इसकी कितनी कलियाँ
मुरझाई कितनी वल्लरियाँ
पर बोलो सूखे सुमनों पर
कब मधुबन शोर मचाता है,
जो बीत गई, सो बात गई।

आशय स्पष्ट कीजिए : "जो छूट गए, फिर कहाँ मिले" ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आशय स्पष्ट करते समय पंक्ति के शब्दार्थ के साथ उसका प्रसंगगत जीवन-संदेश भी बताना चाहिए।
- छूटे तारों का उल्लेख बीते सुख और बिछुड़े प्रिय आधारों की वापसी असंभव होने की ओर संकेत करता है।

चरण 1: पंक्ति का प्रसंग देखिए आकाश के अनेक तारे टूट जाते हैं और उससे बिछुड़ जाते हैं। कवि पूछता है कि जो इस प्रकार छूट गए, वे फिर कहाँ मिलते हैं। यहाँ प्रश्न वास्तव में उनके वापस न लौटने का भाव प्रकट करता है।

चरण 2: निहित संदेश समझिए जीवन में कुछ प्रिय व्यक्ति, संबंध या अवसर ऐसे छूट जाते हैं जिन्हें केवल दुःख और विलाप करने से पुनः प्राप्त नहीं किया जा सकता। इसलिए उनके बिछोह की वास्तविकता स्वीकार करके वर्तमान को सँभालना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष पंक्ति का आशय है कि जो प्रिय व्यक्ति या सुख जीवन से सदा के लिए बिछुड़ गए, वे विलाप करने से वापस नहीं आते। अतः बीते दुःख को स्वीकार कर आगे बढ़ना चाहिए।

त्वरित सुझाव: आशय में केवल छूटने का अर्थ न लिखें; वापस न आने और उसे स्वीकार करने का संदेश भी जोड़ें।

19. किसी प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के सम्पादक को पत्र लिखिए जिसमें बाढ़ उतरने के बाद बच गए लोगों के असहाय-निरुपाय जीवन का चित्रण हो। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादक को लिखा पत्र जनसमस्या का तथ्यपूर्ण चित्रण करके समाज और प्रशासन का ध्यान आकर्षित करता है।
- औपचारिक पत्र में प्रेषक, दिनांक, प्राप्तकर्ता, विषय, संबोधन, मुख्य कथ्य और समापन का क्रम रखा जाता है।

चरण 1: प्रारूप निर्धारित कीजिए प्रेषक का पता और दिनांक लिखने के बाद प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के संपादक का पदनाम तथा पता दिया जाएगा। विषय में बाढ़ उतरने के बाद पीड़ितों की दुर्दशा और पुनर्वास की आवश्यकता स्पष्ट की जाएगी। भाषा विनम्र, संवेदनशील और तथ्यपरक होगी।

चरण 2: विषयवस्तु की योजना बनाइए पत्र में उजड़े घरों, नष्ट फसलों, भोजन और स्वच्छ जल की कमी, बीमारियों की आशंका तथा रोजगार के संकट का वर्णन किया जाएगा। अंत में राहत शिविर, चिकित्सा, राशन और पुनर्वास के लिए प्रशासनिक कार्रवाई की माँग होगी। पीड़ितों का चित्रण दया जगाने के साथ ठोस सहायता की आवश्यकता भी स्पष्ट करेगा।

चरण 3: पूरा नमूना पत्र 12, नदी किनारा मार्ग
पटना, बिहार
20 अगस्त, 2007
सेवा में,
संपादक महोदय,
दैनिक हिंदुस्तान,
पटना।
विषय: बाढ़ उतरने के बाद पीड़ितों की दुर्दशा और पुनर्वास की आवश्यकता।
महोदय,
आपके प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के माध्यम से मैं प्रशासन और समाज का ध्यान बाढ़ से बचे लोगों के असहाय जीवन की ओर दिलाना चाहता हूँ। पानी उतर गया है, किंतु पीड़ितों की विपत्ति अभी समाप्त नहीं हुई है।
कई परिवारों के घर ढह चुके हैं। बचे हुए मकानों में कीचड़ और गंदगी भरी है। अनाज बह गया है, फसलें नष्ट हो गई हैं और पशुओं की हानि ने आजीविका का सहारा भी छीन लिया है। लोग खुले आसमान के नीचे या अस्थायी तंबुओं में रहने को विवश हैं। बच्चों को पर्याप्त भोजन नहीं मिल रहा और वृद्धों तथा बीमारों के लिए दवाइयाँ उपलब्ध नहीं हैं। दूषित जल और सड़ती वस्तुओं के कारण संक्रामक रोग फैलने की आशंका है। जिन लोगों ने अपने प्रियजन खो दिए हैं, उनका मानसिक कष्ट भी अत्यंत गहरा है।
प्रशासन से निवेदन है कि सुरक्षित आश्रय, स्वच्छ पेयजल, राशन और चिकित्सा शिविरों की तत्काल व्यवस्था करे। प्रभावित बस्तियों की सफाई तथा जलस्रोतों का शुद्धीकरण कराया जाए। क्षति का सर्वेक्षण करके पारदर्शी ढंग से आर्थिक सहायता दी जाए और लोगों को रोजगार उपलब्ध कराया जाए। स्वयंसेवी संस्थाएँ भी कपड़े, भोजन और आवश्यक सामग्री पहुँचाने में सहयोग करें।
कृपया इस समस्या को प्रमुखता से प्रकाशित करें, ताकि बचे हुए लोगों को सम्मानपूर्वक जीवन फिर से आरंभ करने का अवसर मिल सके।
धन्यवाद।
भवदीय,
अमित कुमार

चरण 4: निष्कर्ष इस पत्र में बाढ़ उतरने के बाद भी जारी आश्रय, भोजन, स्वास्थ्य और आजीविका के संकट को सामने रखकर तात्कालिक राहत तथा स्थायी पुनर्वास की माँग की गई है।

त्वरित सुझाव: आपदा पर पत्र लिखते समय पीड़ा के चित्रण के साथ उसके समाधान के ठोस और व्यावहारिक उपाय भी लिखिए।

अथवा

19. अपने पर्वतारोहण के शौक का उल्लेख करते हुए अपने पिताजी को पत्र लिखकर अनुरोध कीजिए कि वे आपको आगामी अप्रैल मास से पर्वतारोहण संस्थान, उत्तरकाशी में प्रशिक्षण के लिए अनुमति प्रदान करें। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पिताजी को लिखा जाने वाला पत्र पारिवारिक पत्र है। इसकी भाषा आत्मीय, विनम्र और स्पष्ट होनी चाहिए। पत्र में अपना पता, दिनांक, संबोधन, मुख्य विषय और अंत में आत्मीय समापन दिया जाता है।
- अनुमति माँगते समय पर्वतारोहण के शौक, प्रशिक्षण के उद्देश्य, संस्थान और आरंभ होने के समय का उल्लेख आवश्यक है। सुरक्षा, पढ़ाई तथा अनुशासन के प्रति जिम्मेदारी बताने से अनुरोध विश्वसनीय बनता है।

चरण 1: प्रारूप और विषय-वस्तु की योजना पत्र की शुरुआत अपने पते और तिथि से करें। 'पूज्य पिताजी' संबोधन के बाद उनके स्वास्थ्य की कामना करें। फिर पर्वतारोहण में अपनी रुचि समझाएँ और आगामी अप्रैल से उत्तरकाशी के पर्वतारोहण संस्थान में प्रशिक्षण लेने की अनुमति माँगें। अंत में सुरक्षा के निर्देश मानने तथा पढ़ाई का ध्यान रखने का आश्वासन दें। चूँकि पत्र पिताजी को है, इसमें कार्यालयी विषय-पंक्ति की आवश्यकता नहीं है।

चरण 2: पूरा आदर्श पत्र छात्रावास, राजकीय इंटर कॉलेज
देहरादून
15 मार्च, 2007

पूज्य पिताजी,
सादर चरणस्पर्श।

आशा है, आप तथा माताजी स्वस्थ होंगे। मेरी पढ़ाई अच्छी चल रही है और वार्षिक परीक्षा की तैयारी भी पूरी है। आज मैं अपने एक प्रिय शौक के विषय में आपकी अनुमति चाहता हूँ।

आपको याद होगा कि बचपन से ही मुझे पहाड़ों पर घूमना और ऊँची चोटियों को देखना बहुत अच्छा लगता है। विद्यालय के भ्रमणों में भाग लेने से पर्वतारोहण के प्रति मेरी रुचि और बढ़ी है। मैं इस शौक को उचित प्रशिक्षण के साथ विकसित करना चाहता हूँ, ताकि कठिन परिस्थितियों में भी सावधानी से काम कर सकूँ।

मेरी इच्छा है कि आगामी अप्रैल मास से पर्वतारोहण संस्थान, उत्तरकाशी में प्रशिक्षण प्राप्त करूँ। वहाँ प्रशिक्षकों के मार्गदर्शन में चढ़ाई के तरीके, उपकरणों का सही उपयोग और सुरक्षा संबंधी नियम सीखने का अवसर मिलेगा। इससे शारीरिक क्षमता, आत्मविश्वास, अनुशासन और मिलकर काम करने की भावना भी बढ़ेगी।

प्रशिक्षण के दौरान मैं सभी सुरक्षा निर्देशों का पालन करूँगा और कोई जोखिमभरा काम अपनी इच्छा से नहीं करूँगा। अपनी पढ़ाई का क्रम भी बनाए रखूँगा। कृपया मुझे इस प्रशिक्षण में भाग लेने की अनुमति प्रदान करें। आपकी सहमति मिलने पर प्रवेश, अवधि और शुल्क की पूरी जानकारी लेकर आगे की व्यवस्था करूँगा।

माताजी को मेरा प्रणाम और छोटी बहन को स्नेह। आपके उत्तर की प्रतीक्षा रहेगी।

आपका आज्ञाकारी पुत्र
अमित

चरण 3: निष्कर्ष इस पत्र में पर्वतारोहण के शौक का स्पष्ट उल्लेख करके आगामी अप्रैल से उत्तरकाशी के पर्वतारोहण संस्थान में प्रशिक्षण लेने की अनुमति माँगी गई है। आत्मीय भाषा और जिम्मेदार व्यवहार का आश्वासन अनुरोध को प्रभावी बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: पत्र भेजने से पहले जाँचें कि शौक, अप्रैल मास, उत्तरकाशी का संस्थान और पिताजी से अनुमति का अनुरोध चारों बातें स्पष्ट रूप से आ गई हों।

20(क). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए : युवा पीढ़ी का संसार [10 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विषय-प्रधान निबंध में भूमिका, विषय का क्रमबद्ध विवेचन और उपसंहार होना चाहिए। 'युवा पीढ़ी का संसार' विषय युवाओं की आकांक्षाओं, अवसरों, चुनौतियों और सामाजिक जिम्मेदारी का संतुलित चित्र प्रस्तुत करने की अपेक्षा करता है।
- प्रभावी निबंध में प्रत्येक अनुच्छेद एक मुख्य विचार विकसित करता है। उदाहरण विचार को स्पष्ट करें, लेकिन अप्रमाणित आँकड़ों या अत्यधिक सामान्यीकरण का सहारा न लिया जाए। प्रस्तुत आदर्श निबंध लगभग 300 शब्दों में विषय को विकसित करता है।

चरण 1: विषय की रूपरेखा बनाएँ पहले युवावस्था की ऊर्जा और सपनों का परिचय दें। इसके बाद शिक्षा, तकनीक और रोजगार के अवसरों पर लिखें। प्रतिस्पर्धा, दबाव और असमानता जैसी चुनौतियों को भी शामिल करें। अंत में परिवार, शिक्षकों और युवाओं की साझा जिम्मेदारी बताते हुए सकारात्मक दिशा सुझाएँ। संतुलित दृष्टिकोण के लिए युवाओं की क्षमताओं और कठिनाइयों, दोनों को स्थान दें।

चरण 2: लगभग 300 शब्दों में आदर्श निबंध **युवा पीढ़ी का संसार**

युवा पीढ़ी का संसार ऊर्जा, जिज्ञासा और सपनों से बना है। वह अपने जीवन को सार्थक बनाना चाहती है और समाज में अपनी पहचान खोजती है। उसके सामने पुरानी परंपराएँ भी हैं और बदलते समय की नई संभावनाएँ भी। इन्हीं के बीच उसे अपनी राह चुननी पड़ती है।

आज शिक्षा, विज्ञान, संचार और तकनीक ने युवाओं के लिए अनेक द्वार खोले हैं। वे घर बैठे दूर देशों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, नए कौशल सीख सकते हैं और अपने विचार दूसरों तक पहुँचा सकते हैं। खेल, कला, अनुसंधान तथा उद्यम जैसे क्षेत्रों में भी उनकी रुचि बढ़ रही है। उनकी कल्पनाशीलता समाज की समस्याओं के नए समाधान खोज सकती है।

फिर भी यह संसार केवल सुविधाओं से भरा नहीं है। परीक्षा, रोजगार और आर्थिक भविष्य की चिंता अनेक युवाओं को परेशान करती है। निरंतर तुलना और सफलता की जल्दबाजी से उनका आत्मविश्वास घट सकता है। उपभोक्तावाद कभी-कभी मनुष्य का मूल्य उसके चरित्र के बजाय उसकी वस्तुओं से आँकने लगता है। ग्रामीण और वंचित युवाओं के लिए अवसरों तक पहुँचना भी कठिन होता है।

ऐसे समय में परिवार और शिक्षकों का सहयोग आवश्यक है। युवाओं की बात सुनी जाए और उनकी रुचि के अनुसार मार्गदर्शन दिया जाए। शिक्षा उन्हें नौकरी के साथ विवेक, संवेदना और जिम्मेदारी भी सिखाए। स्वस्थ संवाद तथा मानसिक परेशानियों में सहायता पाने का वातावरण बनाना उतना ही जरूरी है। अवसरों की समानता के बिना उनकी पूरी प्रतिभा सामने नहीं आ सकती।

युवाओं को भी स्वतंत्रता के साथ अनुशासन अपनाना होगा। समय का सदुपयोग, नियमित परिश्रम, स्वास्थ्य की देखभाल और दूसरों के प्रति सम्मान उनके व्यक्तित्व को मजबूत बनाते हैं। तकनीक साधन बने, जीवन का स्वामी नहीं। यदि युवा अपनी आकांक्षाओं को समाज की आवश्यकताओं से जोड़ें, तो उनका संसार अधिक मानवीय बनेगा। जागरूक युवा पीढ़ी ही देश के भविष्य को आशा और निर्माण की दिशा दे सकती है।

चरण 3: निष्कर्ष निबंध युवा पीढ़ी की ऊर्जा और संभावनाओं के साथ उसकी चुनौतियों को भी सामने रखता है। शिक्षा, समान अवसर, संवेदनशील मार्गदर्शन और जिम्मेदार स्वतंत्रता युवाओं के संसार को बेहतर बना सकते हैं।

त्वरित सुझाव: इस विषय पर केवल तकनीक या रोजगार तक सीमित न रहें; सपने, दबाव, सामाजिक असमानता और जिम्मेदार नागरिकता को जोड़कर संतुलित निबंध लिखें।

20(ख). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए : लड़की को जन्म लेने का अधिकार है [10 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बालिका के जीवन और समानता के अधिकार के समर्थन में तर्कपूर्ण निबंध।
- निबंध में भूमिका, विषय का क्रमबद्ध विस्तार और विचार से जुड़ा उपसंहार आवश्यक है।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति विषय लड़की को जन्म लेने का अधिकार है के लिए उपयुक्त शीर्षक देकर निबंध आरंभ करें। लगभग 300 शब्दों में भूमिका, मुख्य विचार, समस्या तथा समाधान और उपसंहार का क्रम रखें। भाषा स्पष्ट, मौलिक और प्रवाहपूर्ण हो; विचारों

को अनुच्छेदों में विकसित करें।

चरण 2: विषयवस्तु की योजना पहले बालिका के जीवन के अधिकार को स्थापित करें। इसके बाद पुत्र-प्राथमिकता की रूढ़ियों, समान अवसरों के महत्त्व और परिवार तथा समाज के दायित्व पर चर्चा करें। समापन में समानता और गरिमा का संदेश दें।

चरण 3: पूर्ण आदर्श निबंध लड़की को जन्म लेने का अधिकार है

किसी शिशु का जन्म परिवार में आशा और आनंद लेकर आता है। यह आनंद उसके लड़का या लड़की होने पर निर्भर नहीं होना चाहिए। लड़की भी स्वतंत्र व्यक्तित्व वाली मनुष्य है। उसे जन्म लेने, सुरक्षित रहने और सम्मान के साथ आगे बढ़ने का उतना ही अधिकार है जितना लड़के को। जन्म से पहले ही उसका जीवन छीन लेना मानवता और समानता की भावना के विरुद्ध है।

हमारे समाज में पुत्र को वंश चलाने वाला और बुढ़ापे का सहारा मानने की धारणा रही है। दूसरी ओर बेटी को दहेज और विवाह के खर्च से जोड़कर बोझ समझ लिया जाता है। ये धारणाएँ भेदभाव को बढ़ाती हैं। संतान का मूल्य उसके लिंग से नहीं, उसके व्यक्तित्व और कर्म से तय होना चाहिए। अनेक बेटियाँ परिवार की जिम्मेदारियाँ निभाती हैं और माता-पिता को सहारा देती हैं।

लड़कियों को शिक्षा तथा अवसर मिलें तो वे विज्ञान, प्रशासन, खेल, साहित्य और समाजसेवा में महत्त्वपूर्ण योगदान करती हैं। उनकी प्रतिभा का विकास रोकना पूरे समाज की प्रगति रोकना है। लड़कियों की संख्या घटने से सामाजिक संतुलन भी बिगड़ता है। इसलिए बालिका का जीवन बचाना किसी एक परिवार की निजी चिंता नहीं, सामूहिक जिम्मेदारी है।

इस स्थिति को बदलने के लिए घर से शुरुआत करनी होगी। बेटे और बेटी के पालन-पोषण, भोजन, पढ़ाई तथा स्वास्थ्य में समान व्यवहार हो। दहेज की मांग का विरोध किया जाए। विद्यालय बच्चों में समानता का संस्कार विकसित करें। समाज भ्रूण के लिंग के आधार पर भेदभाव रोकने के प्रयासों में सहयोग दे। माता-पिता को बेटी की शिक्षा और आत्मनिर्भरता पर गर्व करना चाहिए।

लड़की को जन्म लेने का अधिकार देना कोई उपकार नहीं, उसके मानवीय सम्मान को स्वीकार करना है। जब हर बेटी निर्भय होकर जन्म लेगी और अपने सपनों को आकार दे सकेगी, तभी हमारा समाज सचमुच सभ्य और न्यायपूर्ण कहलाएगा।

चरण 4: निष्कर्ष यह निबंध विषय को क्रमबद्ध अनुच्छेदों में विकसित करते हुए मानवीय मूल्यों से जुड़ा स्पष्ट निष्कर्ष प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: निबंध लिखने से पहले चार-पाँच मुख्य बिंदु चुन लें और अंतिम अनुच्छेद को मूल विषय से जोड़कर समाप्त करें।

20(ग). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए : नई सदी : नया समाज [10 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तकनीकी प्रगति तथा सामाजिक मूल्यों के संतुलन पर विचारपूर्ण निबंध।
- निबंध में भूमिका, विषय का क्रमबद्ध विस्तार और विचार से जुड़ा उपसंहार आवश्यक है।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति विषय नई सदी : नया समाज के लिए उपयुक्त शीर्षक देकर निबंध आरंभ करें। लगभग 300 शब्दों में भूमिका, मुख्य विचार, समस्या तथा समाधान और उपसंहार का क्रम रखें। भाषा स्पष्ट, मौलिक और प्रवाहपूर्ण हो; विचारों को अनुच्छेदों में विकसित करें।

चरण 2: विषयवस्तु की योजना भूमिका में नई सदी के परिवर्तनों का संकेत दें। फिर तकनीक की उपयोगिता, सुविधाओं के समान वितरण और समान अवसरों की आवश्यकता समझाएँ। पर्यावरण तथा मानवीय संबंधों की चुनौतियों के साथ युवाओं की भूमिका रखते हुए उपसंहार लिखें।

चरण 3: पूर्ण आदर्श निबंध नई सदी : नया समाज

नई सदी अपने साथ नए सपने, नई चुनौतियाँ और परिवर्तन के अनेक अवसर लेकर आई है। विज्ञान, संचार और शिक्षा के प्रसार ने हमारे जीवन की गति बढ़ा दी है। आज दूर बैठे लोगों से संवाद संभव है और ज्ञान के नए द्वार खुल रहे हैं। किंतु नया समाज केवल आधुनिक साधनों से नहीं बनता; उसके लिए विचारों और व्यवहार में भी बदलाव आवश्यक है।

तकनीक ने काम करने, पढ़ने और जानकारी प्राप्त करने के तरीके बदल दिए हैं। किसान मौसम की सूचना पा सकता है और विद्यार्थी दूर स्थित ज्ञान-स्रोतों तक पहुँच सकता है। चिकित्सा की प्रगति से अनेक रोगों का उपचार संभव हुआ है। इन सुविधाओं का लाभ तभी पूरा

होगा जब वे शहरों के साथ गाँवों और संपन्न लोगों के साथ वंचित वर्गों तक भी पहुँचें।

नए समाज की सबसे बड़ी पहचान समान अवसर होने चाहिए। स्त्री-पुरुष, अमीर-गरीब और विभिन्न समुदायों के बीच सम्मान का संबंध बने। जाति, धर्म और भाषा के आधार पर किसी की योग्यता या अधिकारों को कम न आँका जाए। शिक्षा व्यक्ति को केवल रोजगार के योग्य न बनाए, बल्कि विवेकशील और जिम्मेदार नागरिक भी बनाए।

नई सदी की चुनौतियाँ भी गंभीर हैं। उपभोक्तावाद मनुष्य को वस्तुओं की दौड़ में उलझाता है। प्रदूषण, बेरोजगारी और बढ़ती असमानता प्रगति पर प्रश्न उठाते हैं। परिवार और पड़ोस के रिश्तों में संवेदना घटे तो सुविधाएँ भी अकेलापन दूर नहीं कर सकतीं। इसलिए विकास के साथ प्रकृति की रक्षा, श्रम का सम्मान और मानवीय संबंधों की गर्माहट बचानी होगी।

युवाओं को इस निर्माण में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। वे प्रश्न पूछें, नए विचार अपनाएँ और सार्वजनिक जीवन में ईमानदारी बरतें। परंपरा की उपयोगी बातों को सँभालते हुए हानिकारक रूढ़ियों को छोड़ना होगा। नई सदी का नया समाज तभी सार्थक होगा जब उसकी पहचान केवल समृद्धि नहीं, न्याय, सहयोग और करुणा भी हों।

चरण 4: निष्कर्ष यह निबंध विषय को क्रमबद्ध अनुच्छेदों में विकसित करते हुए मानवीय मूल्यों से जुड़ा स्पष्ट निष्कर्ष प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: निबंध लिखने से पहले चार-पाँच मुख्य बिंदु चुन लें और अंतिम अनुच्छेद को मूल विषय से जोड़कर समाप्त करें।

20(घ). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए : भ्रष्टाचार — कारण और निवारण [10 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में विषय का स्पष्ट परिचय, क्रमबद्ध विवेचन और सार्थक निष्कर्ष होना चाहिए।
- लगभग 300 शब्दों के लेखन में विचारों की संगति, मानक भाषा तथा विषयानुकूल उदाहरण आवश्यक हैं।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति शीर्षक देकर प्रस्तावना से विषय का परिचय कराएँ। मुख्य भाग में उसके कारण, प्रभाव और व्यावहारिक उपाय क्रम से रखें। छोटे अनुच्छेदों में विचार विकसित करें और अंत में अपना स्पष्ट दृष्टिकोण व्यक्त करें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध भ्रष्टाचार — कारण और निवारण

भ्रष्टाचार का अर्थ है निजी लाभ के लिए अपने पद, अधिकार या सार्वजनिक संसाधनों का अनुचित उपयोग करना। रिश्वत लेना, सिफारिश के आधार पर अवसर बाँटना, मिलावट करना तथा सार्वजनिक धन का गबन इसके विविध रूप हैं। यह केवल आर्थिक अपराध नहीं, बल्कि विश्वास और नैतिकता का संकट भी है।

भ्रष्टाचार का प्रमुख कारण धन और सुविधाएँ शीघ्र प्राप्त करने की लालसा है। जब सफलता का मूल्यांकन केवल संपत्ति से किया जाता है, तब अनुचित साधनों को भी स्वीकार्यता मिलने लगती है। जटिल प्रक्रियाएँ, अनावश्यक विलंब और निर्णयों में गोपनीयता बिचौलियों को अवसर देते हैं। कमजोर निगरानी, दंड मिलने में देरी और प्रभावशाली लोगों को मिलने वाला संरक्षण भी इस समस्या को बढ़ाते हैं। नागरिकों का अपने अधिकारों से अनजान रहना इसके विस्तार में सहायक होता है।

इसका सबसे अधिक नुकसान सामान्य नागरिक उठाता है। गरीब व्यक्ति को अपने अधिकार की सेवा पाने के लिए भी अतिरिक्त धन देना पड़ता है। विकास योजनाओं का लाभ जरूरतमंदों तक पूरा नहीं पहुँचता। योग्य लोगों के अवसर घटते हैं और समाज में निराशा बढ़ती है। धीरे-धीरे व्यवस्था के प्रति लोगों का भरोसा कमजोर पड़ने लगता है।

निवारण के लिए प्रशासनिक सुधार और नैतिक जागरूकता दोनों आवश्यक हैं। सरकारी सेवाओं की प्रक्रिया सरल हो, शुल्क स्पष्ट हों और काम पूरा करने की समय-सीमा निर्धारित हो। ऑनलाइन आवेदन तथा भुगतान से अनावश्यक व्यक्तिगत हस्तक्षेप घट सकता है। सार्वजनिक व्यय का विवरण नागरिकों को उपलब्ध कराया जाए। शिकायतों की निष्पक्ष जाँच हो और शिकायतकर्ता को सुरक्षा मिले। दोष सिद्ध होने पर पद या प्रभाव देखे बिना कार्रवाई की जाए।

परिवार और विद्यालय में ईमानदारी तथा सार्वजनिक जिम्मेदारी के संस्कार विकसित करना भी जरूरी है। नागरिक स्वयं रिश्वत देने और अनुचित लाभ लेने से बचें। कानून, पारदर्शिता और सजग नागरिकता के संयुक्त प्रयास से ही भ्रष्टाचार पर प्रभावी नियंत्रण संभव है।

चरण 3: निष्कर्ष उपर्युक्त निबंध में विषय का परिचय, मुख्य पक्षों का विवेचन और समाधानपरक निष्कर्ष क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत हैं।

त्वरित सुझाव: पहले चार बिंदुओं की रूपरेखा बना लें; हर अनुच्छेद को एक प्रमुख विचार तक सीमित रखें और अंतिम अनुच्छेद में विषय से जुड़ा निष्कर्ष दें।

20(ङ). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए : शहर चलें अब गाँव की ओर [10 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में विषय का स्पष्ट परिचय, क्रमबद्ध विवेचन और सार्थक निष्कर्ष होना चाहिए।
- लगभग 300 शब्दों के लेखन में विचारों की संगति, मानक भाषा तथा विषयानुकूल उदाहरण आवश्यक हैं।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति शीर्षक देकर प्रस्तावना से विषय का परिचय कराएँ। मुख्य भाग में उसके कारण, प्रभाव और व्यावहारिक उपाय क्रम से रखें। छोटे अनुच्छेदों में विचार विकसित करें और अंत में अपना स्पष्ट दृष्टिकोण व्यक्त करें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध शहर चलें अब गाँव की ओर

शहरों की चमक लंबे समय से गाँवों के युवाओं को आकर्षित करती रही है। शिक्षा, रोजगार और बेहतर सुविधाओं की खोज में लोग महानगरों का रुख करते हैं। किंतु आज भीड़, प्रदूषण और बढ़ते खर्च के बीच गाँवों की ओर लौटने का विचार नया महत्त्व पा रहा है। इसका अर्थ प्रगति से दूर जाना नहीं, बल्कि विकास के अवसरों को व्यापक बनाना है।

गाँवों में खुला वातावरण, प्रकृति का सान्निध्य और सामुदायिक जीवन की आत्मीयता मिलती है। खेत, पेड़ और जलस्रोत मनुष्य को उसके परिवेश से जोड़ते हैं। ग्रामीण जीवन कृषि, पशुपालन, हस्तशिल्प और स्थानीय ज्ञान की समृद्ध परंपरा भी सँजोए हुए है। इन संसाधनों के उचित उपयोग से सम्मानजनक आजीविका के अनेक अवसर विकसित किए जा सकते हैं।

फिर भी केवल गाँवों का गुणगान करना पर्याप्त नहीं है। बहुत से ग्रामीण क्षेत्रों में अच्छी शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, परिवहन और रोजगार की कमी है। पानी तथा बिजली की अनिश्चित उपलब्धता भी कठिनाई पैदा करती है। इसलिए गाँव की ओर लौटने का आह्वान तभी सार्थक होगा, जब वहाँ जीवन और काम की आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध हों। ग्रामीण विकास को दान नहीं, नागरिकों के अधिकार और देश की जरूरत के रूप में देखना चाहिए।

सड़कों, इंटरनेट और विश्वसनीय बिजली का विस्तार गाँवों को नए अवसरों से जोड़ सकता है। कृषि उत्पादों का स्थानीय प्रसंस्करण, छोटे उद्योग और सहकारी संस्थाएँ आय बढ़ा सकती हैं। प्रशिक्षित युवा अपने ज्ञान से खेती में सुधार, ऑनलाइन सेवाओं और छोटे उद्यमों को बढ़ावा दे सकते हैं। स्थानीय विद्यालयों तथा स्वास्थ्य केंद्रों को सक्षम बनाना भी उतना ही आवश्यक है।

शहर और गाँव एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं। दोनों के बीच ज्ञान, संसाधनों और अवसरों का संतुलित आदान-प्रदान होना चाहिए। यदि गाँवों में सम्मानजनक रोजगार और बुनियादी सुविधाएँ मिलें, तो लौटना विवशता नहीं, स्वेच्छा का निर्णय होगा। समृद्ध गाँव ही संतुलित और सशक्त भारत की आधारशिला बन सकते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष उपर्युक्त निबंध में विषय का परिचय, मुख्य पक्षों का विवेचन और समाधानपरक निष्कर्ष क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत हैं।

त्वरित सुझाव: पहले चार बिंदुओं की रूपरेखा बना लें; हर अनुच्छेद को एक प्रमुख विचार तक सीमित रखें और अंतिम अनुच्छेद में विषय से जुड़ा निष्कर्ष दें।